

SBS अध्ययन-पुस्तिका

इफिसियों के नाम पत्री

मसीह का अगम्य धन

“पौलुस के लेखों का मुकुट”

“सबसे दिव्य रचना”

“सब पत्रियों में सबसे राजसी”

“यह पत्री शुद्ध संगीत है ... जो हम यहाँ पढ़ते हैं, वह गाता हुआ सत्य है, संगीत में ढली हुई शिक्षा”

“इफिसियों के नाम पत्री अब तक लिखे गए सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों में से एक है।”

“पौलुस की पत्रियों का शिखर”

यह पत्री किसी और पत्री की तरह नहीं, मसीही विश्वास के सार, उसके उद्गम और उसके क्षितिज, उसकी परिपूर्णता और उसके प्रभाव का वर्णन करती है – उस विश्वास का, जो एक मरे हुए, जी उठे और सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर के पुत्र में स्थिर है।

Hans-Jörg Ronsdorf / ख्रिस्तलिखे गेमाइन्डे केम्पटेन (Christliche Gemeinde Kempten), आल्गॉय (Allgäu)

विषय-सूची

- इफिसुस नगर
- पत्री के प्राप्तकर्ता
- पौलुस, तीमुथियुस और यूहन्ना तथा इफिसुस
- पत्री लिखने का कारण
- पत्री की विषय-वस्तु और रूपरेखा
- स्वर्गीय स्थान: वे हमसे कितनी दूर हैं?
- स्वर्गीय लोक में आत्मिक आशीर्ष: ये क्या हैं?
- चुनाव (पूर्वनियति): केवल एक विवाद का विषय?
- लेपालकपन और सन्तान होना: क्या दोनों बस एक ही बात हैं?
- बैठो – चलो – खड़े रहो: परमेश्वर का क्रम
- नए नियम की कलीसिया: यह कब से है?
- परमेश्वर की परिपूर्णता – सब बातों का लक्ष्य
- पुराने नियम की प्रतिरूप-विद्या (टाइपोलॉजी) और इफिसियों की पत्री
- मसीह सिर: एकता, कार्य, प्रतिनिधित्व

- पाँच व्यक्ति-रूपी वरदान: प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार-प्रचारक, चरवाहे और शिक्षक
- नया मनुष्य: वह कहाँ और कैसे दिखाई देता है
- प्रधानताएँ और अधिकार: वह दुष्ट और अदृश्य संसार
- परमेश्वर के हथियार: आत्मिक युद्ध – पर कैसे?
- इफिसुस और कुलुस्से
- प्रयुक्त साहित्य

इफिसुस, नगर

एफ़ेसोस (लैटिन Ephesus, यूनानी Ἔφεσος, तुर्की Efes) प्राचीन काल में एशिया माइनर (आज का तुर्की) के सबसे महत्वपूर्ण और सबसे पुराने यूनानी नगरों में से एक था। एफ़ेसोस इज़मिर (İzmir) से लगभग 70 किमी दक्षिण में, तुर्की के पश्चिमी तट (एजियन सागर) से थोड़ी दूरी पर, प्राचीन प्रदेश आयोनिया में स्थित है। प्राचीन काल में यह सीधे समुद्र के किनारे था। गाद जमने तथा जलवायु और भूकंपीय परिवर्तनों के कारण समय के साथ तटरेखा पश्चिम की ओर खिसक गई, जिससे यह नगर आज कई किलोमीटर भीतर की ओर है और अब बंदरगाह-नगर नहीं रहा।

एफ़ेसोस रोमी साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण नगरों में से एक था, और 2,00,000 से कहीं अधिक निवासियों के साथ सबसे बड़े नगरों में से भी एक, तथा आसिया प्रांत के राज्यपाल (प्रोकॉन्सल) का मुख्यालय। अनेक सार्वजनिक भवन बने, जिनका खर्च नगर ने भी और धनी नागरिकों ने भी उठाया। इनमें सम्राट वेस्पासियन (Vespasian) और हेड्रियन (Hadrian) के मंदिर भी थे, जिनकी सम्राट-पूजा के अंतर्गत आराधना की जाती थी। जहाँ तक मिशन-कार्य का प्रश्न है, बड़े व्यापार-मार्गों और बंदरगाह की स्थिति के कारण इफिसुस की रणनीतिक स्थिति अच्छी थी।

यह एक अंतरराष्ट्रीय नगर था, विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों का केंद्र-बिंदु और मिलन-स्थल। इफिसुस अरतिमिस देवी और उसके विशाल मंदिर के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध था, जो प्राचीन संसार के 7 आश्चर्यों में गिना जाता था। देवी-देवताओं की पूजा, गुप्त विद्या (ऑकल्ट) और जादू-टोना इस नगर में ही नहीं, पूरे एशिया माइनर में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

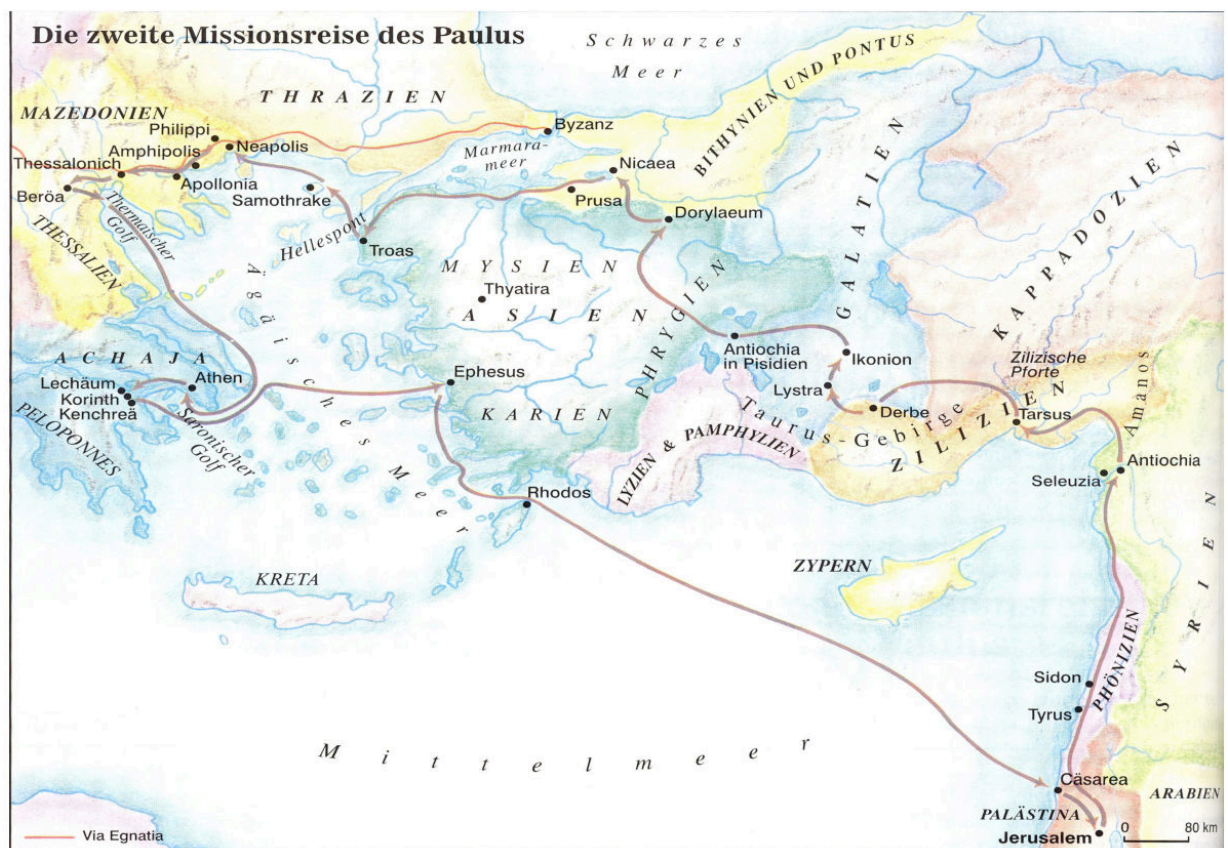
इस पृष्ठभूमि में पत्री के कुछ अंश विशेष रूप से समझ में आते हैं। कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि पत्री लिखने का कारण ठीक इसी आत्मिक-धार्मिक पृष्ठभूमि में है।

19वीं शताब्दी में अरतिमिस के मंदिर के अवशेषों की खोज के साथ एफ़ेसोस का पुरातात्विक अनुसंधान आरंभ हुआ। (स्रोत: www.wikipedia.de)

आज इफिसुस प्रतिवर्ष कई लाख आगंतुकों के साथ तुर्की के पर्यटन-आकर्षणों में से एक है।

कलीसिया या चर्च के रूप में कोई मसीही गवाही इस नगर में बहुत समय से नहीं रही।

स्थिति



पौलुस और इफिसुस

अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के अंत में पौलुस पहली बार इफिसुस आया, पर थोड़े समय बाद उसे फिर छोड़ गया (प्रेरितों के काम 18:19-21)। उसकी तीसरी मिशनरी यात्रा (प्रेरितों के काम 18:23 – 21:16) उसे फिर इफिसुस ले गई, जहाँ वह 3 वर्ष रहा और काम करता रहा (प्रेरितों के काम 20:31), क्योंकि प्रभु के पास वहाँ उसके लिए एक बड़ा काम था। वहीं से उसने लगभग 54 और 55 ईस्वी में कुरिन्थियों के नाम दोनों पत्रियाँ लिखीं। इफिसियों को, और फिलिप्पियों तथा कुलुस्सियों को, और फिलेमोन को भी, उसने रोम से (संभवतः पहले ही कैसरिया से) अपनी पहली रोमी कैद के समय, लगभग 60 – 62 ईस्वी में लिखा। ये सब पत्रियाँ उसकी कैद का उल्लेख करती हैं। ये पत्रियाँ तुखिकुस ने पहुँचाई (6:21-22)।

पूरे एशिया माइनर और उससे आगे के लिए एक सेतु-शीर्ष के रूप में इफिसुस में पौलुस का कार्य आशीष से भरा था: “यह दो वर्ष तक होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के सब रहनेवाले, क्या यहूदी क्या यूनानी, प्रभु का वचन सुन लिया। और परमेश्वर पौलुस के हाथों से असाधारण सामर्थ्य के काम करता था, यहाँ तक कि लोग उसकी देह से छुआए हुए रूमाल और अंगोछे बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ जाती रहती थीं और दुष्ट आत्माएँ उनमें से निकल जाती थीं”, प्रेरितों के काम 19:10-12।

और: “इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्य के साथ बढ़ता और प्रबल होता गया”, प्रेरितों के काम 19:20। इस संदर्भ में इफिसुस के प्राचीनों से पौलुस का विदाई-भाषण बहुत शिक्षाप्रद है, क्योंकि यहाँ वह अपने कई वर्षों के निवास और सेवा को याद दिलाता है और अपने काम का वर्णन करता है: प्रेरितों के काम 20:17-38।

तीमुथियुस और इफिसुस

निस्संदेह तीमुथियुस कई बार इफिसुस में रहा। एक बार पौलुस ने उसे वहाँ छोड़ा था (1 तीमुथियुस 1:3)। तीमुथियुस के नाम पहली पत्री (और दूसरी भी) इफिसुस भेजी गई, क्योंकि तीमुथियुस वहाँ था। इस पत्री से पता चलता है कि वहाँ झूठी शिक्षाओं (ज्ञानवाद/ग्नोसिस, व्यवस्थावाद आदि) की समस्याएँ थीं, जिनकी उसे देखभाल करनी थी।

ऐतिहासिक और कलीसियाई परंपरा तीमुथियुस को इफिसुस का बिशप बताती है।

यूहन्ना, प्रेरित, और इफिसुस

प्रेरित यूहन्ना के विषय में कहा जाता है कि वह लंबे समय तक इफिसुस में रहा। इसके लिए कोई बाइबलीय प्रमाण-पाठ तो नहीं है, पर समकालीन गवाहों के प्रमाण हैं। प्राचीन कलीसियाई परंपरा में ऐसे विवरण मिलते हैं, जिनके अनुसार यूहन्ना बहुत अधिक आयु में एशिया माइनर में मरा। जस्टिन शहीद (Justin der Märtyrer) दूसरी शताब्दी के मध्य में “यूहन्ना, प्रेरितों में से एक” का उल्लेख एक ऐसे गवाह के रूप में करता है, जो “हमारे बीच” (अर्थात् इफिसुस में) रहा था। एशिया माइनर से आए इरेनियस (Irenäus) (दूसरी शताब्दी के अंत में) अनेक स्थानों पर प्रेरित यूहन्ना की बात करते हैं, जो एशिया माइनर में रहा, और स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यूहन्ना ने अपना सुसमाचार इफिसुस में लिखा और वहाँ सम्राट त्राजान (Trajan) के शासनकाल तक रहा।

इफिसुस के नाम पत्र, और यूहन्ना के अन्य सब पत्र (प्रकाशितवाक्य की कलीसियाओं के नाम), एशिया माइनर में उसके कार्यक्षेत्र की गवाही देते हैं।

एक और कलीसियाई (कैथोलिक!) परंपरा बताती है कि यूहन्ना यरूशलेम के विनाश से पहले यीशु की माता मरियम और अन्य स्त्रियों के साथ इफिसुस चला गया।

विचार करने योग्य तथ्य यह है कि पौलुस तीमुथियुस को ग्रेसिस (ज्ञानवाद) की खतरनाक शिक्षा के बारे में लिखता है, जिसका सामना यूहन्ना भी अपनी पत्रियों में करता है।

निष्कर्ष: इफिसुस की महानगरीय कलीसिया दो प्रेरितों के निवास से, उनके दूतों या सहकर्मियों और शिष्यों से, अपुल्लोस और अक्विला व प्रिस्किल्ला दंपति जैसे व्यक्तित्वों से, और उन पत्रियों से, जो उसे (नए नियम के संग्रह के पूरा होने से पहले) मिलीं, विशेष रूप से विशेषाधिकार-प्राप्त और उन्नत हुईं।

431 ईस्वी में एफेसोस में कलीसिया की तीसरी महासभा (कौंसिल) हुई, जिसके निर्णय आज भी मान्य हैं। इन सबके बावजूद, दुःख की बात है कि वहाँ मसीही गवाही का कुछ भी शेष नहीं रहा।

पत्री लिखने का कारण

सामान्यतः ठीक ही कहा जाता है कि इस पत्री का कोई विशेष कारण नहीं है, जैसा कि उदाहरण के लिए कुरिन्थियों या गलातियों की पत्री में साफ़ दिखाई देता है। यह एक सामान्य पत्री है, एक प्रकार का परिपत्र, जिसमें विशेष व्यक्तिगत विवरण नहीं, पर विस्तृत और क्रमबद्ध शिक्षा है। यह किसी और पत्री की तरह नहीं, कलीसिया, मसीह की देह, के विषय में शिक्षा को, और मसीह के सिर होने तथा मसीही की स्वर्गीय स्थिति को खोलकर रखती है। इफिसुस केवल व्यापार या धन का ही नहीं, बल्कि रहस्य-धर्मों, मूर्तिपूजा, गुप्त विद्या और जादू का भी केंद्र था। लोगों का जीवन इन्हीं से निर्धारित होता था। पौलुस द्वारा कई बार उल्लिखित आत्मिक शक्तियाँ प्रभुत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। अपने हितों के लिए प्रभाव डालने हेतु इनका आह्वान किया जाता था। इस प्रकार उनका प्रभाव सर्वव्यापी था, परन्तु सहायक होने की अपेक्षा कहीं अधिक खतरनाक। इसलिए एक और कारण यह माना जा सकता है कि इफिसुस के, और इस प्रकार पूरे एशिया माइनर के विश्वासियों को इन शक्तियों के विषय में समझाया जाए, ताकि वे अब इनसे न डरें (या अपने नए विश्वास में इनमें से कुछ न अपना लें – इसके लिए कुलुस्सियों की पत्री देखिए), पर उनके सर्वव्यापी शैतानी प्रभाव से सावधान रहें (आत्मिक संघर्ष)। झूठी और पराई शिक्षाओं से भी चेतावनी दी गई है, यद्यपि (कुलुस्सियों की पत्री की तरह) उनका निकट से वर्णन नहीं किया गया।

पत्री की विषय-वस्तु और रूपरेखा

पौलुस परमेश्वर की अनन्त युक्ति और उसके उद्देश्य को प्रकट करता है, जिसमें मसीह – मनुष्य बना परमेश्वर का पुत्र – और व्यक्तिगत रूप से विश्वासी भी और कलीसिया भी सम्मिलित हैं। परमेश्वर की इस युक्ति को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए मसीह का मरना और जी उठना आवश्यक था, क्योंकि जो अब विश्वासी हैं, वे कभी पापों में मरे हुए थे। उन्हें नए मनुष्य बनाया जाता है, जो परमेश्वर की उपस्थिति और उसके भविष्य के योग्य हैं। परमेश्वर की अनन्त युक्ति अभी से, वर्तमान समय में, विश्वासियों और कलीसिया के जीवन में दिखाई देती है।

यह पत्री किसी और पत्री की तरह नहीं, मसीही विश्वास के सार का वर्णन करती है, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ एक मरे हुए, जी उठे और सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर के पुत्र पर स्थापित है। **क्योंकि एक मनुष्य वहाँ स्वर्ग में परमेश्वर के पास उसके दाहिने हाथ है, इसलिए मनुष्य वहाँ हो सकते हैं – अभी से उसमें और शीघ्र ही उसके साथ।** उसमें हम वहाँ, स्वर्गीय स्थानों में हैं, व्यक्तिगत रूप से और कलीसिया के रूप में, सदा के लिए मसीह के साथ अटूट रूप से जुड़े हुए।

पत्री की रूपरेखा:

भाग 1: अध्याय 1 – 3 शिक्षात्मक (सैद्धांतिक) भाग मसीह में उद्धार-स्थिति – उद्धार का निश्चयार्थ (इंडिकेटिव)	
अध्याय 1	
पद 1 – 14	परमेश्वर की स्तुति और आराधना: परमेश्वर अपने लिए क्या योजना बनाता और करता है और उसने हमें क्या दिया है, ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर का उद्देश्य: मसीह सिर और उसमें हमारा भाग
पद 15 – 23	हम क्या पहचान सकते हैं: पहले स्वयं परमेश्वर को, फिर हम में परमेश्वर की मीरास, भविष्य और उसकी जीवन देनेवाली सामर्थ्य
अध्याय 2	
पद 1 – 10	पहले और अब – परमेश्वर का उद्धार: आत्मिक मृत्यु से स्वर्गीय स्थानों में मसीह में नई उद्धार-स्थिति तक
पद 11 – 22	यहूदियों और अन्यजातियों के बीच अब कोई विभाजन नहीं: दोनों एक नया मनुष्य और परमेश्वर का नया मंदिर बनते हैं
अध्याय 3	
पद 1 – 13	अन्यजातियों के प्रेरित की विशेष सेवा: नए नियम की कलीसिया, परमेश्वर की “नई” प्रजा, परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य के रूप में
पद 14 – 21	हमें सदा और सबसे पहले किसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए: आत्मा की सामर्थ्य, यीशु के प्रेम और परमेश्वर की परिपूर्णता के विषय में मध्यस्थता और स्तुति
भाग 2: अध्याय 4 – 6 व्यावहारिक भाग – विश्वासियों का जीवन नए मनुष्य का जीवन – उद्धार का आज्ञार्थ (इम्पेरेटिव)	
अध्याय 4	
पद 1 – 16	एकता के लिए उपदेश: देह के वरदान और अंग, और देह अर्थात् कलीसिया की वृद्धि
पद 17 – 32	नया मनुष्य: विश्वासियों का बिल्कुल अलग जीवन
अध्याय 5	
पद 1 – 21	परमेश्वर की सन्तान के रूप में जीवन: संसार के विपरीत परमेश्वर का अनुकरण करनेवालों के रूप में बोलना और चाल-चलन
पद 22 – 33	मसीह और कलीसिया: पुरुष और स्त्री के संबंध का आदर्श
अध्याय 6	
पद 1 – 9	माता-पिता और बच्चे – दास और स्वामी

पद 10 – 24:	परमेश्वर के हथियार: आत्मिक युद्ध
-------------	----------------------------------

विषय-क्षेत्र

अब इफिसियों के नाम पत्री के पाठ को मुख्य विषयों के रूप में देखा जाएगा। इसके बाद कुछ विषयांतर (एक्सकर्स) आते हैं, उन शब्दों के विषय में जो एक से अधिक बार आते हैं, और जो हर हाल में इस पत्री की विशेषता हैं, क्योंकि वे पत्री की विषय-वस्तु, लक्ष्य और उद्देश्य को दिखाते हैं। वे पत्री को समझने की कुंजी हैं।

स्वर्गीय स्थान – वे पृथ्वी से कितनी दूर हैं?

(“स्वर्ग का एक टुकड़ा, परमेश्वर का एक स्थान”)

शब्द “स्वर्गीय [स्थान]” (यूनानी: *ἐπουρανίους* *epouraniois*, बहुवचन) पत्री के संदेश की एक केंद्रीय अभिव्यक्ति है, जो परमेश्वर के सिंहासन से, सारी सामर्थ्य के केंद्र से, सीधे हमारे दैनिक जीवन तक पहुँचती है।

यह अभिव्यक्ति केवल इसी पत्री में आती है, जिसका संबंध शायद इफिसुस की विशेष धार्मिक स्थिति से है, जो अरतिमिस / डायना की मूर्तिपूजा और अन्य पंथों (जादू, टोना, गुप्त विद्या) का केंद्र था।

आज हम केवल 2 आकाशों/स्वर्गों में अंतर करते हैं: स्वर्ग, वह स्थान जहाँ परमेश्वर रहता है (अदृश्य, उस आयाम से भिन्न एक आयाम, जिसमें हम रहते हैं), और वायु-आकाश, अर्थात् वायुमंडल और/या ब्रह्मांड, जहाँ आकाशीय पिंड हैं (दृश्य)।

इस पत्री के पहले पाठक, अन्यजाति और यहूदी, स्वर्ग को कई स्तरों में (प्रायः तीन या सात) जानते थे, जिनमें विभिन्न आत्मिक प्राणी (स्वर्गदूत, दुष्टात्माएँ, शक्तियाँ आदि) बसे हुए थे। मूल रूप से इसका पवित्रशास्त्र के प्रकाशन, अर्थात् पुराने नियम से कोई संबंध नहीं था, बल्कि व्यापक रूप से फैले देवी-देवताओं के विश्वास और विशेष या चरमपंथी धाराओं से था, यहूदी धर्म के भीतर भी। पौलुस इस विश्वास या धारणा को अस्वीकार नहीं करता, बल्कि इसे दिया हुआ और वास्तविक मानकर चलता है, बिना इसके बारे में और ज्ञान दिए।

उसका कथन यह है कि अदृश्य स्वर्ग एक ओर परमेश्वर के सिंहासन का स्थान है, और साथ ही आत्मिक संसार का क्षेत्र भी। जब वह कहता है कि हम स्वर्गीय स्थानों में दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध एक आत्मिक संघर्ष लड़ते हैं (इफिसियों 6:12), तो यह संघर्ष पृथ्वी पर होता है, अर्थात् बिल्कुल ठोस रूप से हमारे दैनिक जीवन में।

यहाँ भी स्पष्ट होता है कि स्वर्गीय स्थान परमेश्वर के शासन-सिंहासन के स्थान से हमारे जीवन तक पहुँचते हैं। अदृश्य स्वर्ग का यह दूसरा आयाम, यह आत्मिक वास्तविकता, हमारे उस आयाम को, जिसमें हम रहते हैं, काटती है, उसमें व्याप्त होती है या उस पर छाई रहती है। अदृश्य संसार के लिए दृश्य और अदृश्य का यह अंतर मानो है ही नहीं। दूसरे शब्दों में, ये स्वर्गीय स्थान एक प्रकार से हमारे बिल्कुल निकट भी हैं।

इसलिए यह शब्द बहुत व्यापक है: एक ओर यह परमेश्वर का सिंहासन है, दूसरी ओर हमें घेरे हुए वायुमंडल, जिसमें आत्मिक और अदृश्य शक्तियाँ रहती हैं (2:2)।

पौलुस पाँच बार शब्द “स्वर्गीय [स्थान]” का प्रयोग करता है और हर बार एक नया पहलू खोलता है:

1. 1:3 कहता है कि (केवल) वहीं आत्मिक आशीषों का धन दिया और पाया जाता है।

2. 1:20 मसीह को वहाँ परमेश्वर के दाहिने हाथ, परमेश्वर के सिंहासन पर बैठा हुआ दिखाता है। यह सिंहासन स्वर्गीय स्थानों का केंद्र है और "स्वर्गीय स्थानों का एक छोर" दिखाता है।
3. 2:6 स्पष्ट करता है कि हम भी वहाँ पहुँचाए गए हैं, क्योंकि हम मसीह से जुड़े हुए हैं, "मसीह में" हैं। वहाँ होने के सिवा हम आशीष पा ही नहीं सकते थे। वहीं हमारा सच्चा घर है, हमारी भविष्य की आशा का सार। परन्तु यहाँ बात "अभी" की है, एक ऐसी स्थिति या पद की, जिसे हम अभी से ग्रहण किए हुए हैं, यद्यपि हम अभी पृथ्वी पर रहते हैं।
4. 3:10 जोड़ता है कि केवल हर एक विश्वासी (अपने आप में एक व्यक्ति के रूप में) ही वहाँ नहीं है, बल्कि कलीसिया समग्र रूप से (सामूहिक रूप से) भी, और वहाँ स्वर्गदूत उसे देखते हैं – अदृश्य संसार के सामने, विशेषकर परमेश्वर से फिरे हुए संसार के सामने, परमेश्वर के उद्धार-कार्य के प्रदर्शन के रूप में।
5. 6:12 प्रकट करता है कि स्वर्गीय क्षेत्रों में शैतान और उसके दूतों (दुष्टात्माओं) तथा हमारे बीच एक संघर्ष है। उनका दुष्ट काम संसार में, पृथ्वी पर होता है। स्वर्गीय क्षेत्र मानो हमारे उस क्षेत्र को काटता है, जिसमें हम रहते हैं, जहाँ यह संघर्ष होता है। अदृश्य संसार का दृश्य संसार पर, स्वर्ग का पृथ्वी पर प्रभाव भारी और वर्तमान है।

इन पाठों से पहचाना जा सकता है कि एक ओर बात परमेश्वर की निकटतम उपस्थिति की है, उसके निवास-स्थान की, उसके सिंहासन के स्थान की। अभिव्यक्ति "स्वर्गीय [स्थानों] में" (... ἐν τοῖς ἐπουρανίοις *en tois epouraniois*) केवल इसी पत्री में आती है। यह एक ओर स्थान का संकेत है, जिसे जोड़े गए शब्द "स्थान" (या: क्षेत्र, लोक, प्रदेश, स्वर्गीय संसार) से स्पष्ट किया जाता है – जो यूनानी पाठ में नहीं है। इसका अनुवाद "स्वर्गीयों में" भी किया जा सकता है। इसी प्रकार यह किसी बात के ढंग और स्वरूप, उसके चरित्र का भी संकेत है। आशीषें केवल स्वर्गीय स्थानों में ही नहीं हैं, वे अपने आप में भी "स्वर्गीय" हैं।

इस शब्द में एक विरोध भी है, अर्थात् स्वर्ग और पृथ्वी का, और **दृश्य और अदृश्य** का। हमारे लिए संभवतः यह अंतिम बात इस अमूर्त शब्द को समझने का सबसे सरल मार्ग है, यद्यपि इन शब्दों का यही एकमात्र पहलू नहीं है। जब यीशु "स्वर्ग पर उठा लिया गया", तो वह चेलों की आँखों के सामने से उठा लिया गया (प्रेरितों के काम 1:9); दूसरे शब्दों में, वह अदृश्य हो गया। यहाँ बात यह नहीं है कि यीशु किसी बहुत दूर के स्थान के लिए चल पड़ा, बल्कि यह कि वह अदृश्य, स्वर्गीय संसार में, परमेश्वर के सिंहासन के पास ओझल हो गया।

शब्द "आत्मिक आशीष" पौलुस को अभिव्यक्ति "स्वर्गीय स्थानों में" तक ले जाता है – एक ऐसा संबंध, जो कदापि संयोग नहीं है। प्राचीन इस्राएल ने परमप्रधान की आशीष पाई, और वह भी **पार्थिव** आशीषें: अपना देश, भरपूर फ़सल, सन्तान, स्वास्थ्य।

परन्तु अब बात ऐसी आशीष की है, जैसी पहले कभी नहीं थी, और जो मनुष्यों के द्वारा प्राप्त भी नहीं की जा सकती। पहले पृथ्वी पर आशीष थी। अब स्वर्ग में आशीष है, अर्थात् स्वर्गीय आशीषें। और इसका अर्थ है कि यदि हमें उसे पाना है, तो हमें वहाँ होना होगा। और ठीक यही संदेश अभिव्यक्ति "स्वर्गीय स्थानों" में है: स्वर्ग हमारे लिए खुला है, वहीं हमारा स्थान है, हमारी मातृभूमि, हमारा घर। इस्राएल के विपरीत हम एक स्वर्गीय प्रजा हैं। परमेश्वर हमें अपने पास रखना चाहता है, और वहाँ तक का मार्ग जी उठे और महिमा पाए परमेश्वर-पुत्र और मनुष्य-पुत्र के द्वारा खुला है। वह हमें परमेश्वर के पास ले आया, केवल दोष की समस्या हल करने के लिए नहीं, बल्कि हमें घर लाने के लिए, परमेश्वर के हृदय तक। उड़ाऊ पुत्र की तरह हमारा स्वर्गीय पिता अपने घर में हमारा स्वागत करता

है और वहाँ हमें वह सब देता है, जो पिता के पास है (लूका 15:11-32)। हम पुत्रों के रूप में अपनाए और स्वीकार किए गए हैं, और ऐसे होकर वारिस हैं, जिनका वह सब कुछ है, जो पिता के पास है।

हमें आत्मिक आशीषें ठीक "स्वर्गीय स्थानों में" ही क्यों दी जाती हैं? क्योंकि परमेश्वर की इच्छा है कि हम वहाँ हों, जहाँ महिमा पाया हुआ, स्वर्गीय मसीह है। उसके साथ हम सदा के लिए अटूट रूप से जुड़े हैं, व्यक्तिगत रूप से और एक साथ उसकी देह, अर्थात् कलीसिया के रूप में।

इसके साथ हम सदा मनुष्य ही रहेंगे, परमेश्वर के स्वरूप में सृजे हुए। परन्तु मसीह में परमेश्वर के हस्तक्षेप के द्वारा हम एक दिन स्वर्गीय का रूप धारण करेंगे, और तब हम भी **स्वर्गीय** होंगे (1 कुरिन्थियों 15:48-49)। ऐसे प्राणी हैं, जो सदा से इस क्षेत्र के थे। इस पत्री में उन्हें अधिकार और प्रधानताएँ कहा गया है। ये स्वर्गदूत हैं (फिलिप्पियों 2:10), स्वर्गीय प्राणी। हम पार्थिव प्राणी हैं, जो मसीह के द्वारा स्वर्गीय बनते हैं, मसीह के समान। यह बात स्वर्गदूतों पर कभी लागू नहीं होगी।

केवल इफिसियों की पत्री ही मसीही के स्वर्गीय स्वरूप पर ज़ोर नहीं देती। यह पूरे नए नियम का प्रकाशन है कि कलीसिया एक स्वर्गीय प्रजा है:

- परमेश्वर का पुत्र हमें **स्वर्गीय बातें** (τὰ ἐπουράνια) प्रकट करने आया, जो पहले ज्ञात नहीं थीं और जिन्हें केवल परमेश्वर का पुत्र स्वयं, स्वर्ग से आकर, बता सकता था (यूहन्ना 3:12)
- हम अपने प्रभु यीशु मसीह के **स्वर्गीय राज्य** (εἰς τὴν βασιλείαν αὐτοῦ τὴν ἐπουράνιον/ ... उसके स्वर्गीय राज्य में) के सहभागी हैं (2 तीमुथियुस 4:18)
- हम **स्वर्गीय बुलाहट** (κλήσεως ἐπουρανίου μέτοχοι) में खड़े हैं, **स्वर्ग से स्वर्ग के लिए बुलाए गए** (इब्रानियों 3:1)
- हमें एक **स्वर्गीय वरदान** मिला है (τῆς δωρεᾶς τῆς ἐπουρανίου), जिसका हम स्वाद लेते हैं, अर्थात् आनन्द लेते हैं (इब्रानियों 6:4)
- कुलपिता पहले ही एक **स्वर्गीय** (τοῦτ' ἔστιν ἐπουράνιον) **देश** (πατρίδα) की खोज में थे (ἐπιζητοῦσιν, ढूँढ़ते थे, बाट जोहते थे), तो हम और भी अधिक (इब्रानियों 11:13-16)
- हमारी **नागरिकता स्वर्ग में** है (फिलिप्पियों 3:20)
- (τὸ πολίτευμα ἐν οὐρανοῖς ὑπάρχει)
- हमारी एक **आशा** है, जो **स्वर्ग में** रखी हुई है (कुलुस्सियों 1:5)
- (διὰ τὴν ἐλπίδα τὴν ἀποκειμένην ὑμῖν ἐν τοῖς οὐρανοῖς,)
- हम उन बातों पर ध्यान लगाते हैं, जो **ऊपर हैं, जहाँ मसीह है** (कुलुस्सियों 3:1-4)
- => एक अविनाशी **मीरास** हमारे लिए **स्वर्ग में** रखी हुई है (1 पतरस 1:4) τετηρημένην ἐν οὐρανοῖς
- हम उन बातों को नहीं देखते, जो आँखों से दिखती हैं, बल्कि उन्हें, जो विश्वास में हृदय की आँखों से दिखती हैं – ऐसी **बातें**, जो क्षणिक नहीं, बल्कि **अनन्त हैं**। बात **महिमा के अनन्त भार** की है (2 कुरिन्थियों 4:16-18)

- हम हृदय की आँखों से **स्वर्ग में मसीह की** (अभी अदृश्य) **महिमा** को देखते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18; प्रेरितों के काम 7:55)

स्वर्ग खुला है ... नए नियम का **यही** संदेश है कि स्वर्ग, जिसमें परमेश्वर हम मनुष्यों से, विशेषकर अन्यजातियों से, छिपा हुआ था, अब खुल गया है (जब यीशु मरा, तो मंदिर का परदा फट गया), और प्रवेश का मार्ग पार्थिव, यहूदी पवित्रस्थान में नहीं, बल्कि स्वर्गीय पवित्रस्थान में खुल गया है।

स्वर्ग की सीढ़ी की तरह ... इसी प्रकार नए नियम का यह भी संदेश है कि परमेश्वर स्वर्ग से पुत्र में अपने आप को प्रकट करता है, और दिखाता है कि वह वास्तव में कैसा है। यह एक **स्वर्ग की सीढ़ी** की तरह है, जो पृथ्वी और स्वर्ग को जोड़ती है, और जिस पर हर दिशा में चला जा सकता है (यूहन्ना 1:51; उत्पत्ति 28:12)। परमेश्वर हमारे पास आता है और हम उसके पास जाते हैं। इस पत्री में हम परमेश्वर के सिंहासन तक देखते हैं, जिस पर हमारा प्रभु सबसे ऊँचा आदर का स्थान लिए हुए है, और फिर भी वह उसी समय हम में वास करता है, जो अभी पृथ्वी पर हैं (3:17)। और इसी अर्थ में हमारे पास आत्मिक आशीष है, ऐसे लोगों के रूप में, जो अभी पृथ्वी पर हैं। स्वर्गीय स्थान मानो अपनी सारी आशीष के साथ हमारे हृदयों में हैं। इसलिए ये स्वर्गीय स्थान बिल्कुल निकट हैं, प्रकाश-वर्षों दूर नहीं।

स्वर्ग में पहुँचाए गए ... मसीह में ... वहाँ उसमें

विश्वासियों के रूप में हम मसीह में वहाँ पहुँचाए गए हैं। “मसीह में” (अभी) “मसीह के साथ” नहीं है। “मसीह में” हमारे उस पद या स्थिति का वर्णन करता है, जो हमें उसमें मिली है। अर्थात् परमेश्वर हमें **मसीह में** देखता है, इसलिए हम पहले से ही **वहाँ उसमें** हैं और परमेश्वर के सिंहासन पर उसकी विजय-स्थिति में सहभागी हैं। हमारी उद्धार-स्थिति इससे ऊँची और इससे सुरक्षित नहीं हो सकती।

परमेश्वर के लिए, जो हमें शाब्दिक रूप से, देह के साथ भी वहाँ उस स्थान पर रखना चाहता है, यह अभी से सत्य है, क्योंकि उसके उद्देश्य में लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही उसकी पूर्ति निश्चित है।

उदाहरण के लिए एक दृष्टान्त – क्योंकि स्थान और समय में सोचनेवाले होने के कारण हमें यह कल्पना करना कठिन लगता है कि हम अभी से स्वर्गीय स्थानों में हैं:

जनता का एक चुना हुआ प्रतिनिधि संसद में उसके हितों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार जिन्होंने उसे चुना, वे मानो वहाँ संसद में इस प्रतिनिधि में उपस्थित हैं और प्रतिनिधित्व पाते हैं। इसी प्रकार मसीह के द्वारा और मसीह में हम स्वर्ग में, सिंहासन के पास, सामर्थ्य के केंद्र में प्रतिनिधित्व पाते हैं।

एक और उदाहरण, जो दिखाता है कि व्यावहारिक रूप से स्वर्गीय स्थानों में कैसे जिया जाता है:

जल-मकड़ियों की एक विशेष प्रजाति पानी के नीचे रहती है, पर पानी के नीचे हवा के एक बुलबुले में से साँस लेती है, जिसे वह सतह से अपने साथ पानी के नीचे ले गई है। इसी प्रकार हम यहीं से उस स्वर्गीय संसार से / उसमें / उसके सहारे जीते हैं, जिसे मसीह भरता है। ऐसे जीवन की शर्त निश्चय ही यह है कि हम स्वर्गीय बातों की खोज में रहें, स्वर्गीय बातों को जानें।

विभाजन मिट गया है ...

दृश्य संसार और अदृश्य संसार का, पृथ्वी और स्वर्गीय स्थानों का विभाजन विश्वासियों के लिए अभी से मिट गया है: उनकी पिता तक पहुँच है। आनेवाले युग में, जब मसीह सब बातों का सिर होगा, यह विभाजन विश्वव्यापी रूप से भी समाप्त हो जाएगा।

देवताओं में इफिसियों का पहले का विश्वास ...

इफिसियों के पुराने विश्वास में स्वर्गीय स्थान उन देवताओं का शक्ति-क्षेत्र थे, जो उनके जीवन को प्रभावित और निर्धारित करते थे। ये शत्रुतापूर्ण प्राणी थे, जिनकी श्रेष्ठ शक्ति के कारण मनुष्य उनके हाथ में था। एक ओर अदृश्य संसार खतरनाक था, क्योंकि ठीक-ठीक पता नहीं था कि वहाँ क्या हो रहा है। इस क्षेत्र का बड़ा महत्व और आकर्षण था; देवताओं से अपेक्षा थी कि वे अपने लक्ष्यों तक पहुँचने में सहायता करें। गुप्त विद्या और जादू, और जादुई मंत्र भी, देवताओं को वश में करने के लिए थे। अब इफिसी लोग इस भय से स्वतंत्र थे; हाँ, वे इस क्षेत्र में पहुँचाए भी गए थे, पर वहाँ की शक्तियों से ऊपर उठाए गए थे। मसीह में वे सामर्थ्य के केंद्र में पहुँचाए गए थे; शक्तियाँ अब उनकी हानि नहीं कर सकती थीं। इस प्रकार वे केवल शक्तियों से ही नहीं, बल्कि उन तारों से भी ऊपर थे, जो उनकी धारणाओं के अनुसार मनुष्यों का भाग्य निर्धारित करते थे।

स्वर्गीय लोक में आत्मिक आशीषें: ये क्या हैं?

परमेश्वर से आशीष पाने से बढ़कर कोई क्या चाह सकता है? उसने यही किया और हमें आशीष दी। यह है हमारा परमेश्वर; उसके समान कोई नहीं।

यह आशीष आत्मिक और स्वर्गीय स्वरूप की है। इस प्रकार इस आशीष को पार्थिव, भौतिक आशीष के सामने रखा गया है। यह स्वर्ग में दी जाती है।

क्या इसलिए हमारे पास कोई पार्थिव आशीष नहीं है? निश्चय ही हमारे पास पार्थिव आशीष भी है। हमारा स्वर्गीय पिता सब मनुष्यों का पालनहार है, पर विशेष रूप से विश्वासियों का (1 तीमुथियुस 4:10)। परन्तु पार्थिव आशीष (और दुःख की बात है कि हम कभी-कभी इसे भरपूरी से उलझा देते हैं) हमसे प्रतिज्ञा की हुई या निश्चित नहीं है। हम उस पर दावा नहीं कर सकते। यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हैं, तो हमें धन्यवादी होना चाहिए – यही पार्थिव आशीष है (1 तीमुथियुस 6:8)। हम एक गिरी हुई सृष्टि में रहते हैं, जो श्राप के अधीन है। आत्मिक आशीष श्राप और पाप के परिणामों को मिटाती नहीं, बल्कि हमारे हृदय को बदलती और भरती है।

आत्मिक आशीष धन और भरपूरी में है; हमें **सारी** आशीषें दी गई हैं। यह एक विशाल सत्य है, जो खाने-पीने और सारे पार्थिव धन से बढ़कर है। जो अब तक मनुष्यों की पहुँच से बाहर था, वह अब हमारी संपत्ति बन जाता है। जो स्वर्ग की महिमा, धन, प्रेम, पवित्रता और जीवन को बनाता है, वह अब हमें मसीह में दिया गया है। परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता, हमें मसीह में, जी उठे और सिंहासन पर विराजमान मनुष्य के पुत्र में, स्वर्ग की महिमा की आशीषों में सहभागी बनाता है। **स्वर्ग में एक महिमा पाया हुआ मनुष्य हमारे लिए मार्ग बनाता है और हमें परमेश्वर के स्वर्गीय खज़ाने तक अपने साथ ले जाता है।**

वहाँ जो **सारी** आत्मिक आशीषें हैं, वे हमारी संपत्ति बन गई हैं। केवल मसीह में हम वह पाते हैं, जिसका सपना देखने का साहस भी कभी किसी मनुष्य ने न किया होता। परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को बलिदान किया और हमारे लिए उसे न रख छोड़ा। वह उसके साथ हमें हर कल्पनीय आशीष देगा (रोमियों 8:32)।

परन्तु क्या हम जानते हैं कि वे आशीषें और स्वर्गीय खज़ाने क्या हैं, जो हमें मसीह में दिए गए हैं, जिनके विषय में पौलुस ठीक यहाँ बात करता है?

जब पौलुस आशीष के विषय में कथन को, विषय-सूची की तरह, अपनी पत्री के बिल्कुल आरंभ में रखता है, तो हमें भी पहले इसी पत्री में आशीषों को खोजना चाहिए, और फिर पत्री से आगे नए नियम में समानांतर और अन्य आशीषें खोजनी चाहिए। इस खोज में हम उसमें अंतर करते हैं, जो परमेश्वर ने हम पर किया और जो उसने हमें बनाया, और उसमें, जो हमें मिला है। एक खज़ाने तक पहुँचने का मार्ग और प्रवेश है, दूसरा स्वयं खज़ाना है।

इस असाधारण पत्री में अपनी यात्रा के दौरान हमें प्रभावशाली आशीषें मिलती हैं। कनान का भेद लेनेवाले जासूसों को भी कभी-कभी अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता था (गिनती 13)। खेती की भरपूरी प्रभावशाली थी। वह सचमुच उनकी होनेवाली थी। **जो हम इफिसियों की पत्री में पाते हैं, वह यहीं और अभी हमारा है**, सब कुछ बिना किसी अपवाद के, चाहे आशीष का एक भाग भविष्य में ही अधिकार में लिया जाएगा। हम किसी विशेष आशीष की प्रतीक्षा नहीं करते; वह हमारे पास है। फिर भी उसे थामना, खोजना, देखना और उसका आनन्द लेना है, ताकि यह धन हमें यह चेतना भी दे कि परमेश्वर के पुत्रों के रूप में हम धनी हैं, न कि केवल भविष्य में होंगे। हमें अपनी मीरास को जानना चाहिए। “पर तू धनी है”, मसीह स्मरना की कलीसिया से कहता है (प्रकाशितवाक्य 2:9), जो भौतिक संपत्ति में कंगाल थी। यहाँ बात आत्मिक धन की है, पैसे, घरों और गाड़ियों की नहीं। अपने दैनिक विश्वास-जीवन के लिए उस धन को जानना बहुत महत्वपूर्ण है, जो परमेश्वर ने दिया है। किसी मनुष्य को क्या लाभ, यदि वह नहीं जानता कि वह पहले से बड़े धन का स्वामी और वारिस है, और फिर भी कंगाली में जीता है? यदि वह यह जानता, तो उसकी सोच, जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण और उसकी आशा बिल्कुल अलग होती! इसीलिए पौलुस (इस पत्री में दो बार: 1:15-18; 3:14-19) इतनी गहराई से प्रार्थना करता है कि हमारे हृदय की आँखें खुल जाएँ, ताकि हम आशीष को जानें। परमेश्वर हमारे लिए कोई सँकरी पटरी वाला, अधूरा मसीही जीवन निर्धारित नहीं करता! वह गंभीरता से चाहता है कि हम मसीह की परिपूर्णता और अगम्य धन में जिएँ! बाहरी कंगाली और उसी समय सताव भी इसका विरोधाभास नहीं है! यहाँ विश्वास और आशा का सिद्धांत लागू होता है: अभी से – और अभी नहीं! परन्तु शीघ्र ही “अभी नहीं” समाप्त हो जाएगा, और हम मसीह के साथ मिलकर अपनी मीरास के अधिकारी होंगे।

तथाकथित समृद्धि-सुसमाचार एक विरोधाभास है, क्योंकि वह आत्मिक और पार्थिव आशीष को उलझा देता है, या स्वर्ग को पहले ही ले लेना चाहता है। भक्ति भौतिक या आर्थिक लाभ का साधन नहीं है।

आइए, अपनी खोज आरंभ करें। पद 11 में कहा गया है कि हमने एक **मीरास** पाई है। परमेश्वर के पुत्रों और सन्तानों के रूप में हम परमेश्वर के वारिस बन गए हैं (रोमियों 8:17; याकूब 2:5)। मीरास क्या है? सबसे पहले बात मसीह की है, जिसे परमेश्वर सब बातों के वारिस के रूप में (इब्रानियों 1:2) सब से ऊपर रखेगा। वह अभी से सब बातों से ऊपर है, पर यह शीघ्र प्रकट होगा, अर्थात् पूरी सृष्टि के लिए दिखाई देगा। महिमा में इस शासन में हमारा भी भाग है। हम बिल्कुल निकट से इसमें सम्मिलित हैं। कलीसिया के रूप में हम उसकी देह हैं, जिसे सब बातों का प्रबंध सौंपा जाएगा। यह एक भविष्य की आशीष है, जिसका बयाना हमारे पास अभी से है। हम महिमा के इस क्षितिज के सामने जीते हैं; हम नीचे की ओर नहीं, ऊपर की ओर जा रहे हैं।

मीरास से जुड़ी एक और स्वर्गीय आशीष है: **पवित्र आत्मा**, जो मीरास को सुरक्षित रखने और उसे दिलाने के लिए बयाना और ज़मानत है (1:13-14)। इस प्रकार आत्मा हमारी संपत्ति है और हमें बुद्धि और प्रकाशन के आत्मा के रूप में दिया गया है (1:17)। आत्मा हमें धन से परिचित कराता है, और वही है, जो हमें पिता के पास ले जाता है

(2:18)। आत्मा ही हमें भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य देता है – अर्थात् एक ऐसी आशीष, जिसका अनुभव प्रतिदिन होता है (3:16; और देखें 4:23, 30; 5:18; 6:17-18)। परमेश्वर का आत्मा ही है, जिसके द्वारा मसीह की देह की संगति उत्पन्न हुई और जो उसमें जीवन डालता और उसमें व्याप्त रहता है (4:3)। यह आशीष कोई वस्तु नहीं, बल्कि एक व्यक्ति है, एक ईश्वरीय व्यक्ति।

पवित्र आत्मा स्वर्ग से भेजा गया है, जो हमें ईश्वरीय सत्य में ले जाता है, ताकि हम उन बातों को जानें (जान लें), जो परमेश्वर ने हमें दी हैं (1 कुरिन्थियों 2:12; यूहन्ना 16:13; 14:17)। इस पत्री में उसका 13 बार उल्लेख है, और यह उचित ध्यान की माँग करता है। वह स्वयं हमारे लिए एक स्वर्गीय वरदान है, और साथ ही वह है, जो हृदय की आँखों के लिए स्वर्ग की बातें खोलता है।

यह वास्तविकता, यह तथ्य कि यह आत्मा हम में वास करता है, कोई अमूर्त शिक्षा नहीं, बल्कि आत्मिक जीवन की वास्तविकता है, जो हमारे जीवन के हर कार्य, हर घटना को निर्धारित कर सकती और उसमें व्याप्त हो सकती है, यदि हम यीशु के आत्मा को स्थान दें। जहाँ उसे स्थान मिलता है, केवल वहीं वह उसे भर सकता है। आत्मा हमारे पास है, पर आत्मा के पास भी हम होने चाहिए!

पवित्र आत्मा से जुड़ी एक और स्वर्गीय आशीष हमारी संपत्ति बनी: **उसके पुत्रों के रूप में पिता तक पहुँच और उसके साथ संगति**: उसके, अर्थात् आत्मा के द्वारा अब यहुदियों और अन्यजातियों की एक साथ पिता तक पहुँच है (2:18; 3:12)। यह आत्मिक भी है और स्वर्गीय आशीष भी। यह आत्मिक है, क्योंकि हम इसका अनुभव विश्वास में करते हैं। यह स्वर्गीय है, क्योंकि यह हमारा स्वर्गीय पिता है, जो स्वर्ग में रहता है। इसी “स्थान” पर हम उसके पास आते हैं। यह साँस रोक देनेवाली बात है, विशेषकर पहले के पापियों की दृष्टि से, कि हम बिना भय के, पूरी तरह स्वीकार किए जाने की चेतना में, पुत्रों के रूप में पिता के सामने आ सकते हैं। यह परमेश्वर के सामने मन फिराने का क्षण नहीं है। यह एक स्थायी विशेषाधिकार है। वहाँ हम साझे हितों का ध्यान रखते हैं। पिता के प्रेम के पुत्र में मग्न रहना ऐसा ही एक हित है। वहाँ हम अपना जीवन, सारे आनन्द, सारे दुःख फैलाकर रख सकते हैं। वहाँ हम सात्वना और प्रोत्साहन पाते हैं। वहाँ हम उचित समय के लिए अनुग्रह पाते हैं।

पिता और पुत्र के साथ संगति का वर्णन विशेष रूप से प्रेरित यूहन्ना ने अपने सुसमाचार और अपनी पत्रियों में किया है। पुत्र में हमारे पास अनन्त जीवन है, स्वर्ग का, पिता के घर का जीवन।

विश्वासियों की संगति एक स्वर्गीय आशीष है। यह एक स्वर्गीय प्रजा है, जो आत्मा के द्वारा रची गई। सब विश्वासी एक ही जीवन में सहभागी हैं और उनका एक ही लक्ष्य है। यह जुड़ाव, एक देह में और एक घर में परमेश्वर की सन्तानों की यह एकता, परमेश्वर की अनन्त और इसलिए स्वर्गीय योजना थी। वे एक ही जीवन में सहभागी हैं और स्वर्गीय से जुड़े हुए हैं। जब विश्वासी आपस में हार्दिक संगति रखते हैं, प्रेम से एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं, आत्मा, प्राण और देह के अनुसार एक दूसरे की सहायता और समर्थन करते हैं, तो यह स्वर्ग का एक टुकड़ा है। शैतान कलीसिया में अशान्ति के द्वारा इस आशीष को, अर्थात् इस आशीष के आनन्द को, छीन सकता है।

आशीषें हमारा व्यावहारिक लाभ होनी चाहिए। आइए, अपने धन को खोजने और उसका अनुभव करने को गंभीरता से लें। आइए, इस पहचान पर रुक न जाएँ कि हम अनुग्रह पाए हुए पापी हैं, बल्कि आगे बढ़ें, मसीह में अपनी उद्धार-स्थिति को पहचानें और इसी अर्थ में “प्रभु में दृढ़ खड़े रहें”। शैतान की चाल यह है कि हमें इससे भटका दे, ताकि हम केवल त्याग और कठिनाइयाँ देखें, विशेषकर अपने आसपास के उन लोगों से तुलना करके, जिनकी स्थिति शायद बेहतर है, जो जैसे चाहें जी सकते और कर सकते हैं। यह दृष्टि हमें थका देती है और वह आनन्द छीन लेती है, जो वास्तव में हमारे पास होना चाहिए। आइए, इस्राएल की तरह उस देश को, जो उनका था,

जीत भी लें। यही परमेश्वर की इच्छा है: जो उसने आपको दिया है, उसे अपने अधिकार में लीजिए! जो आप बन गए हैं, वही बनकर रहिए और जीइए!

चुनाव (पूर्वनियति): केवल एक विवाद का विषय?

पत्री के बिल्कुल आरंभ में कहा गया है कि इफिसी लोग जगत की उत्पत्ति से पहले चुने गए हैं (1:4) और लेपालकपन के लिए पहले से ठहराए गए हैं (1:5)। इस संदर्भ में चुनाव और पूर्वनिर्धारण एक दूसरे से संबंधित हैं: पहला एक चयन का वर्णन करता है, दूसरा एक ठोस उद्देश्य का, जिससे पहले एक चयन हो सकता है।

इस विषय पर पुस्तकों से पूरा एक पुस्तकालय भरा जा सकता है। जैसा सब जानते हैं, विवाद का बिंदु मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा और परमेश्वर की संप्रभुता के विषय में बहस है। यह बहस इसलिए निरुपाय है, क्योंकि यह प्रायः “या तो – या” की चर्चा के रूप में की जाती है। या तो यह परमेश्वर का संप्रभु चयन है, जो किसी मनुष्य को मन फिराव तक लाता है, या यह मनुष्य का स्वतंत्र निर्णय या चुनाव है, जो सुसमाचार से संबोधित होकर मन फिराता है।

हमें यह मानना होगा कि कुछ बाइबलीय सत्य ऐसे हैं, जिन्हें हम समझा नहीं सकते, अर्थात् जिनकी कल्पना हमारे (बुद्धि के) लिए कठिन है। उदाहरण के लिए यह यीशु के व्यक्तित्व पर लागू होता है, जो एक ही समय में परमेश्वर और मनुष्य था। यह इस तथ्य पर भी लागू होता है कि परमेश्वर एक ही समय में एक है, और फिर भी 3 व्यक्ति है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। परन्तु परमेश्वर की सन्तान होते हुए भी हमारे ज्ञान की सीमाएँ जीवन के अस्तित्वगत प्रश्नों पर भी लागू होती हैं, जैसे दुःख का प्रश्न – शायद हमारे जीवन में, पर निश्चय ही संसार में निर्दोष लोगों का दुःख।

यही बात पूर्व-चुनाव के विषय पर भी लागू होती है। यह कैसे हो सकता है कि कुछ चुने हुए हैं और कुछ नहीं? यदि हम परमेश्वर के एक सीमित चयन के पक्ष में निर्णय लें, तो ठीक ही यह आपत्ति उठानी पड़ेगी कि फिर सुसमाचार सब मनुष्यों को क्यों सुनाया जाए। दूसरी ओर, यदि हम यह निर्णय लें कि हर कोई स्वतंत्र चुनाव से मन फिरा सकता है, तो चुनाव का कोई अर्थ नहीं रह जाता, या शायद ही कोई अर्थ।

चुनाव पापी के विश्वास के निर्णय को अनावश्यक नहीं बनाता। चुनाव के बावजूद पापी को मन फिराने और विश्वास करने के लिए बुलाया जाता है।

मैंने सीखा है और इसे अपना दृढ़ विश्वास बना पाया हूँ: मनुष्य की ज़िम्मेदारी और चुनाव में संप्रभु परमेश्वर का कार्य एक दूसरे को बाहर नहीं करते, बल्कि दोनों एक साथ विद्यमान हैं। दो प्रतीत होते विरोधी तत्वों के एक साथ होने का यह तनाव इससे समझाया या सुलझाया नहीं जाता। यह तनाव हमें सहना होगा, जैसा कि हमारे व्यक्तिगत विश्वास-जीवन के कई प्रश्नों पर भी लागू होता है।

यहाँ बात हमारे परमेश्वर की महानता की है, न कि हमारी बुद्धि की।

एक तुलना सहायक हो सकती है। रेल की पटरी दो पटरियों से बनी होती है, जिन्हें सदा समानांतर चलना होता है और जो कभी एक दूसरे को नहीं काटतीं। ऐसा ही परमेश्वर की संप्रभुता के साथ है, जिसमें वह अपना चयन करता है, और ऐसा ही मनुष्य की ज़िम्मेदारी के साथ है, जिसे मन फिराना होगा। यह पटरी चित्र के रूप में उद्धार के इतिहास का प्रतीक है, जहाँ ठीक ये दोनों पहलू सदा दिखाई देते हैं। यह एक ईश्वरीय और इसलिए अगम्य भेद है कि परमेश्वर अपने लक्ष्य तक कैसे पहुँचता है – और वह भी इस प्रकार कि उसकी महिमा हो और कोई कभी उस पर दोष न लगा सके। क्षितिज पर पटरियाँ मिलती हुई दिखाई देती हैं। इसी प्रकार अंत में परमेश्वर इस भेद को भी

खोल देगा और जो सिद्ध है, वह आ जाएगा। तब हम उसके कार्य को कहीं अधिक अच्छी तरह समझेंगे (1 कुरिन्थियों 13:9-10)।

ये **दो पहलू** यीशु मसीह के दुःखभोग में भी पाए जाते हैं। एक ओर उन सबकी पूरी ज़िम्मेदारी है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से यीशु की हत्या में सम्मिलित थे। दूसरी ओर परमेश्वर का कार्य है, जिसने अपने पुत्र को परमेश्वर के मेमे के रूप में, पाप के लिए बलिदान के रूप में दे दिया। यही परमेश्वर की बुद्धि है। हत्यारों के पास परमेश्वर की योजना का हवाला देकर कोई बहाना नहीं होगा। वे यीशु की हत्या के लिए पूरी तरह ज़िम्मेदार हैं। परन्तु यह परमेश्वर का असीम अनुग्रह है कि यीशु के बलिदान के आधार पर हत्यारों को भी क्षमा मिल सकती है!

सी. एच. मैकिन्टॉश (C. H. Mackintosh) ने एकतरफ़ा ज़ोर को – चाहे वह परमेश्वर की संप्रभुता पर हो या मनुष्य की ज़िम्मेदारी पर – एक ऐसे पक्षी से तुलना की, जिसका केवल एक पंख हो, या ऐसी नाव से, जिसे केवल एक चप्पू से चलाना हो। इन दोनों ध्रुवों के बीच जो तनाव है, उसे हम सुलझा नहीं सकते। वह तब तक बना रहेगा, जब तक हम ज्योति में न होंगे। इस तनाव को सुलझाने का प्रयास करने के बजाय हमें ईश्वरीय अनुग्रह के इस विशाल तत्व को अपने ऊपर काम करने देना चाहिए, उससे भर जाने देना चाहिए – एक विशाल सांत्वना और प्रोत्साहन के रूप में, जो खोए हुएों के प्रति उत्साह में भी दिखाई देना चाहिए।

हम संसार में से – चुने गए हैं (यूहन्ना 15:19)। उसका चयन संसार के निर्बलों और कंगालों को प्राथमिकता देता है (1 कुरिन्थियों 1:27-28; याकूब 2:5)। इसलिए हम अनुग्रह की युक्ति की बात कर सकते हैं। परमेश्वर के चुने हुए उसकी विशेष सुरक्षा का आनन्द लेते हैं (रोमियों 8:33)। उनके विशेष कर्तव्य भी हैं (कुलुस्सियों 3:12)। हम व्यक्तिगत प्राणियों के रूप में चुने गए हैं (यूहन्ना 1:13), पर पूरी कलीसिया के रूप में भी (इफिसियों 3:8-11; 1 पतरस 2:9)। प्रेरित पौलुस थिस्सलुनीकियों के चुने जाने के विषय में निश्चित था, क्योंकि उसने उनमें विश्वास का काम देखा (1 थिस्सलुनीकियों 1:4)। जहाँ तक हम जानते हैं, उसे परमेश्वर की अनन्त युक्ति में यह अंतर्दृष्टि नहीं थी कि कौन उद्धार पाएगा और कौन नहीं। बल्कि उसने और भी अधिक परिश्रम किया, ताकि चुने हुए उद्धार पाएँ (2 तीमुथियुस 2:10)।

हर विश्वासी इस बात पर आनन्दित हो सकता है और इससे साहस पा सकता है कि सब समयों से पहले वह परमेश्वर के हृदय में जाना हुआ था, उसी समय से परमेश्वर ने उसे पहले से जाना और उससे प्रेम किया।

लेपालकपन और सन्तान होना: क्या दोनों बस एक ही बात हैं?

हम कभी “आज्ञा न माननेवाले पुत्र” (2:2; 5:6) और “क्रोध की सन्तान” (2:3) थे; अब हम परमेश्वर के पुत्र हैं, क्योंकि हम लेपालकपन के लिए पहले से ठहराए गए हैं (1:5), और परमेश्वर की “प्रिय सन्तान” हैं (5:1)। इस प्रकार हम “ज्योति की सन्तान” के रूप में जी सकते हैं (5:8)। सन्तान और पुत्रों के रूप में पवित्र आत्मा के द्वारा हमारी “पिता तक” स्वतंत्र “पहुँच” है (2:18; 4:6; 5:20)।

पौलुस के समय में रोमियों में यह मान्य था कि बच्चा पिता की संपत्ति होता था, जैसे पत्नी और दास। बालिग होने पर वह पुत्र, और इस प्रकार वारिस भी बनता था। पुत्र के रूप में उसकी स्थिति बच्चे से भिन्न थी: वह पिता के सामने एक समकक्ष और उसका उत्तराधिकारी बन गया था। रोमी क़ानून में पुत्र के रूप में गोद लेने की प्रथा भी थी, जो गोद लिए गए व्यक्ति को वारिस बनाती थी और सारे पुराने पारिवारिक बंधनों को सदा के लिए तोड़ देती थी।

विश्वासी एक ही समय में पुत्र भी है और सन्तान भी। ऐसा नहीं है कि सामान्य जीवन की तरह एक बच्चा पुत्र बन जाता है और फिर बच्चा नहीं रहता। प्रेरित यूहन्ना ठीक इसी वृद्धि की प्रक्रिया को दिखाता तो है (1 यूहन्ना 2:13-17), पर वहाँ भी यह लागू होता है कि हम एक ही समय में सन्तान और पुत्र हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की सन्तान को आत्मिक रूप से बड़ा (वयस्क) होना चाहिए। ये दोनों उपाधियाँ, जो एक साथ विश्वास की संपत्ति हैं, परमेश्वर हमारे पिता के साथ हमारे संबंध के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करती हैं।

सन्तान होना जन्म की, अर्थात् नए जन्म की, परमेश्वर से मिले जीवन की, सुरक्षा और मीरास की बात करता है (यूहन्ना 1:12; रोमियों 8:16-17, 21; 1 यूहन्ना 3:1-2, 10; 4:2)। **लेपालकपन** स्वीकार किए जाने की, अर्थात् गोद लिए जाने की, आत्मिक वयस्कता की, और मीरास की भी बात करता है। उत्पत्ति की दृष्टि से: परमेश्वर की सन्तान जन्म के द्वारा बनते हैं, परमेश्वर का पुत्र गोद लिए जाने के द्वारा।

लेपालकपन भरोसे से भरा एक संबंध है, जिसमें हम परमेश्वर से कहते हैं: अब्बा, (प्रिय) पिता! रोमियों 8:15; गलातियों 4:6। परमेश्वर ने हमें अपने लिए पुत्रों के रूप में गोद लिया है, जिनसे वह आनन्दित होता है (1:5) और जिनसे वह अपनी अनन्त योजनाओं के विषय में बात कर सकता है (इफिसियों 1)। हमारी देह का छुटकारा हमारे लेपालकपन को पूर्ण करेगा (रोमियों 8:23)। तब परमेश्वर स्वयं और सब मनुष्य हम पर और हम में परमेश्वर के पुत्र को देखेंगे। इसके अतिरिक्त लेपालकपन का संबंध परमेश्वर की ताड़ना और शिक्षा से है (इब्रानियों 12:5-7), पवित्रता से (2 कुरिन्थियों 6:17), व्यवस्था से स्वतंत्रता से (गलातियों 4:7) और महिमा से, अभी और भविष्य में (इब्रानियों 2:10)।

इफिसियों की पत्नी परमेश्वर की अनन्त योजना को प्रकट करती है, जिसे वह अपने पुत्रों के साथ बाँटना चाहता है, और परमेश्वर के उस भविष्य को प्रकट करती है, जिसे वह – पिता के अद्वितीय पुत्र को अनन्त केंद्र बनाकर – अपने बहुत से गोद लिए हुए पुत्रों (और पुत्रियों) के साथ बाँटना चाहता है।

प्रभु यीशु मसीह को कभी “परमेश्वर की सन्तान” नहीं कहा गया; उसने नया जन्म अनुभव नहीं किया। वह परमेश्वर और पिता का अनन्त पुत्र है (2 यूहन्ना 3)। वह सदा से यह था; वह हमारी तरह गोद लिए जाने के द्वारा यह नहीं बना। परमेश्वर के पुत्र के रूप में वह हमारे लेपालकपन का आदर्श, उसका “मूल नमूना” है: हम शीघ्र ही पुत्र के स्वरूप के समान हो जाएँगे, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहिलौठा ठहरे (रोमियों 8:29)।

मनुष्य के रूप में भी वह परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि मनुष्य के रूप में वह पवित्र आत्मा से, परमेश्वर से उत्पन्न हुआ था, न कि अपने क़ानूनी पिता यूसुफ़ से।

बैठो – चलो – खड़े रहो: परमेश्वर का क्रम

यह चीनी लेखक वॉचमैन नी (Watchman Nee) की आशीषमय पुस्तकों में से एक का शीर्षक है। इफिसियों के आधार पर वह इन शब्दों से मसीही जीवन को समझाता है। यह क्रम उसके अनुरूप है, जो इफिसियों हमें सिखाती है। परमेश्वर का उद्धार-कार्य, जैसा अध्याय 2 में वर्णित है, हमें आत्मिक मृत्यु से जीवन में, और मसीह में परमेश्वर के सिंहासन तक ले जाता है। वहाँ मसीह ने स्थान ग्रहण किया है, और क्योंकि हम उसमें हैं, यही बात हम पर भी लागू होती है। **हमारी उद्धार-स्थिति मसीह में है, और इसमें यह सम्मिलित है कि हम भी बैठे हैं और परमेश्वर के उद्धार की परिपूर्णता में विश्राम पा चुके हैं।** इसमें मसीह में उद्धार का पूरा-पूरा हमारे नाम गिना जाना सम्मिलित है, क्योंकि मसीह के द्वारा वह सब पूरा हो चुका है, जो पुराने को समाप्त करने और नया रचने के लिए आवश्यक था। यह पूरा, सिद्ध उद्धार है, जो हमें मसीह में एक ही बार सदा के लिए, अटल रूप से दिया जाता

है। पत्रि के अध्याय 4 से फिर पद 1 का शीर्षक लागू होता है: “जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए हो, उसके योग्य चाल चलो!” विश्राम से, सुरक्षित उद्धार से, मसीही चाल-चलन आरंभ होता है। चाल-चलन इस स्थिति तक पहुँचने का प्रयास नहीं, बल्कि ठीक इसका उलटा है। हम हर दिन इस दृढ़ ज्ञान के साथ जीते हैं कि हम एक ही बार सदा के लिए स्वीकार किए गए हैं। मसीहियों के रूप में हम उद्धार से जीते हैं, उद्धार की ओर नहीं, न ही इस उद्धार को खो देने के जोखिम के साथ। केवल इसी ज्ञान में हम उस ज़िम्मेदारी को ठीक से निभाने योग्य हो सकते हैं, जिसमें इस बुलाहट ने हमें पहुँचाया है।

आत्मिक, भीतरी मनुष्य की तीसरी “शारीरिक मुद्रा” के रूप में **खड़ा रहना** आता है। हमारी पार्थिव देह के विपरीत, आत्मिक मनुष्य तीनों मुद्राएँ एक साथ अपना सकता है। वह सदा मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठा है; इस स्थान को वह फिर कभी नहीं छोड़ता! साथ ही हम निरंतर अपने दैनिक जीवन में हैं, जहाँ वह नया मनुष्य, जिसे हमने उद्धार में पहन लिया है, चलता है। अंत में खड़ा रहना आता है, स्थिर रहना। खड़े रहने, अर्थात् स्थिर और अटल रहने का उपदेश दिखाता है कि जिस स्थिति में हम पहुँचाए गए हैं, जिस आशीष की परिपूर्णता में हम रखे गए हैं, उससे शत्रु और संसार हमें खदेड़ सकते हैं। यह विरोधाभासी लगता है, क्योंकि अभी ज़ोर दिया गया कि यह स्थिति खोई नहीं जा सकती। यह सही है, परन्तु परमेश्वर का शत्रु, शैतान और उसके दूतों की सेना यह चाहती है कि हम इन उद्धार-सत्यों के ज्ञान को और आशीष की परिपूर्णता को भूल जाएँ, कि वे हमारे लिए कुछ अर्थ न रखें, और हम उस संसार की तरह जिएँ, जो परमेश्वर को नहीं जानता।

इस प्रकार हमारे उद्धार के 2 पक्ष हैं: वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिनिष्ठ, उद्धार का निश्चयार्थ (इंडिकेटिव) और उद्धार का आज्ञार्थ (इम्पेरेटिव)। हमारे उद्धार का वस्तुनिष्ठ पक्ष सदा के लिए अछूता है। व्यक्तिनिष्ठ पक्ष में यह सम्मिलित है कि हम अपने जीवन में उससे क्या बनाते हैं, क्या हम उसे व्यवहार में उतारते हैं, क्या हम सचमुच इस बुलाहट के योग्य चलते हैं। “खड़ा रहना” इसी का भाग है। “खड़ा रहना” का अर्थ है कि उद्धार-स्थिति, उद्धार और आशीष की परिपूर्णता (या आशीष का आनन्द) हमारे दैनिक जीवन की व्यावहारिक वास्तविकता है।

नए नियम की कलीसिया: यह कब से है? (इफिसियों 2 + 3)

पहली दृष्टि में यह प्रश्न निराधार लगता है; या दूसरे शब्दों में पूछें: क्या यह प्रासंगिक भी है? निस्संदेह इफिसुस की कलीसिया पौलुस के मिशन-कार्य से बनी। इफिसुस की कलीसिया अपने जन्म का समय जानती थी। परन्तु विश्वव्यापी कलीसिया के जन्म का समय इससे 3 दशक पहले है: यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन नए नियम की कलीसिया, यीशु मसीह की कलीसिया, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा बनी (1 कुरिन्थियों 12:13)। जैसा यीशु ने स्वयं पहले से बताया था, सब विश्वासियों को, परमेश्वर की तितर-बितर सन्तानों को, एक आत्मा में और एक आत्मा से “पिलाया” गया, जिससे वे सब आत्मा के द्वारा एक देह (आत्मिक शरीर) में जुड़ गए, और यह देह मसीह की देह बन गई, जो स्वर्गीय सिर से जुड़ी है।

यह कलीसिया पुराने नियम में नहीं थी। यह संभव नहीं था, क्योंकि पवित्र आत्मा पृथ्वी पर मनुष्यों में वास नहीं करता था, जैसा अब नए नियम के विश्वासियों में होता है। पुराने नियम में अभी कोई स्वर्गीय सिर भी नहीं था, कोई उतरा हुआ और चढ़ा हुआ मसीह नहीं था। आदम से चली आ रही ऐसी कोई चर्च या कलीसिया नहीं है, जिसके विश्वासी सदस्य रहे हों।

फिर भी शीर्षक के प्रश्न का पूरा उत्तर अभी नहीं मिला। अध्याय 3 के आरंभ में पौलुस अपने लेखन के प्रवाह को रोकता है और एक बीच का वाक्य जोड़ता है। वह अपनी प्रेरिताई सेवा की विशेषता पर ज़ोर देता है। अन्यजातियों

के प्रेरित के रूप में, या अन्यजातियों के लिए प्रेरित के रूप में (गलातियों 2:7), उसे एक विशेष प्रकाशन मिला था। परमेश्वर ने उसे कुछ दिखाया और सौंपा, जो पहले ज्ञात नहीं था। वह इसे **“मसीह का भेद”** कहता है। इसका संक्षिप्त वर्णन वह अध्याय 2 में पहले ही कर चुका था। वहाँ वह बताता है कि परमेश्वर का उद्धार-कार्य अब उसकी पार्थिव प्रजा तक सीमित नहीं, बल्कि सब मनुष्यों के लिए है। इसमें अन्यजाति पुरानी परमेश्वर-प्रजा की स्थिति में नहीं जोड़े जाते – जो अपने आप में एक उल्लेखनीय आशीष होती – बल्कि परमेश्वर दोनों से कुछ नया रचता है, अर्थात् एक नया मनुष्य और एक नया मंदिर। जो अध्याय 2 में अभी स्पष्ट नहीं होता, उसका वर्णन पौलुस अध्याय (3) में भावपूर्ण शब्दों में करता है: परमेश्वर का यह कार्य अन्यजातियों की पूरी तरह खोई हुई स्थिति की, और विशेषकर उन यहूदियों की भी, जो मसीहा की मृत्यु के दोषी बन गए थे, कोई प्रतिक्रिया नहीं है, कोई आपातकालीन योजना नहीं, बल्कि उसका अनन्त और संप्रभु उद्देश्य है। सब समयों से पहले परमेश्वर के पास कलीसिया को रचने की यह असाधारण योजना थी, और वह भी सब मनुष्यों में से। कलीसिया के विषय में इस योजना में मसीह का सारा धन प्रकट होता है।

पौलुस कहता है कि यह उद्देश्य पुराने नियम में किसी एक भी मनुष्य को ज्ञात नहीं था। इसलिए पुराने नियम में कलीसिया के विषय में कथन खोजना व्यर्थ होगा। प्रतिरूपात्मक और चित्रात्मक कथन तो हैं, परन्तु वे ऐसे तभी बन सके, जब कलीसिया अस्तित्व में आ गई।

यह बात कि नए नियम की कलीसिया परमेश्वर के अपनी पुरानी प्रजा इस्राएल के साथ इतिहास का केवल एक विस्तार नहीं है, बड़ा महत्व रखती है। नए नियम की कलीसिया पार्थिव परमेश्वर-प्रजा के रूप में इस्राएल का स्थान नहीं लेती, और इस्राएल से की गई प्रतिज्ञाओं को भी अपने ऊपर नहीं लेती। कलीसिया परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य से कुछ नए के रूप में घटनाओं में आती है, और इस रूप में उसका इस्राएल के इतिहास से सीधा संबंध नहीं है। यह इतिहास केवल स्थगित है, एक निश्चित समय के लिए रुका हुआ है। यह समय कलीसिया का समय है, जो तब तक चलता है, जब तक यह कलीसिया स्वर्ग में उठा न ली जाए। इस्राएल के साथ परमेश्वर अपने लक्ष्य तक पहुँचेगा; अपनी पार्थिव प्रजा के विषय में उसकी सब प्रतिज्ञाएँ और भविष्यद्वाणियाँ पूरी होंगी।

हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जब यीशु की कलीसिया का इतिहास अंत के निकट है। इस्राएल से की गई भविष्यद्वाणियों के पूरे होने के लिए उस देश में ऐसी एक जाति का होना भी आवश्यक है। यह पहले ही पूरा हो चुका है, जबकि मसीही कलीसिया अभी पृथ्वी पर है। हम पहले से ही एक प्रकार के संक्रमण-काल में, बाइबल के शब्दों में, अन्तिम समय में जी रहे हैं!

इस प्रकार इफिसियों के नाम पत्री कलीसिया की स्वर्गीय स्थिति की पुष्टि करती है और स्पष्ट करती है कि परमेश्वर के हाथ से इससे बड़ा कुछ नहीं हो सकता कि हम उस आत्मिक समुदाय के अंग हों, जिसे “मसीह की देह” कहा जाता है। न इस्राएल के विषय में, न किसी अन्य जाति या मनुष्यों के समूह के विषय में ऐसा कुछ कहा गया है।

आइए, नए नियम की कलीसिया और इस्राएल के संबंध पर एक बार फिर संक्षेप में लौटें। परमेश्वर के कार्य में निरंतरता भी है और असंतता भी। अर्थात् एक ओर परमेश्वर अपने उद्धार के इतिहास में आगे बढ़ता है, जैसी पुराने नियम में प्रतिज्ञा की गई थी। उदाहरण के लिए, पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के विषय में योएल के वचन की प्रेरितों के काम 2 में पिन्तेकुस्त के दिन एक पूर्व-पूर्ति या आंशिक पूर्ति हुई। पुराने नियम में घोषित नई वाचा में कलीसिया भी सम्मिलित है। परन्तु दूसरी ओर परमेश्वर कलीसिया के साथ कुछ बिल्कुल नया भी आरंभ करता है।

इस स्थान पर रोमियों की पत्री में एक छोटा भ्रमण शायद सहायक होगा। अध्याय 11 में मानवजाति की आशीष के लिए परमेश्वर के उद्धार-कार्य की तुलना एक जैतून के पेड़ से की गई है।

जैतून का पेड़ परमेश्वर की आशीष का एक चित्र है: उसकी प्रतिज्ञा कैसे की जाती है और वह किसे मिलती है, कौन उसे खोता है और कौन उसे पाता है, और अंत में वे भी उसका फिर से आनन्द कैसे लेंगे, जिन्होंने कभी उसे गँवा दिया था।

जैतून का पेड़ विशेष रूप से परमेश्वर की प्रजा इस्राएल को नहीं दर्शाता, बल्कि आशीष के उस क्षेत्र को दिखाता है, जैसी कुलपिताओं से उसकी प्रतिज्ञा की गई और जैसे वह मसीह में पूरी होती है। इस्राएल की प्रजा पहले आशीष के अधीन थी, और उसका शिखर यह होता कि वह मसीहा को ग्रहण करे, जो अपने व्यक्तित्व में कुलपिताओं की आशीष था। केवल कुछ ने ऐसा किया और आशीष पाई। दूसरे काट दिए गए। ये थोड़े से लोग अन्यजातियों में से आए विश्वासियों के साथ एक किए गए। ये भी अब विश्वास के द्वारा कुलपिताओं की आशीषों में सहभागी हैं। ये भी वारिस हैं और अब्राहम के आत्मिक पुत्र, प्रतिज्ञा की सन्तान। परन्तु मूल और स्वाभाविक डालियाँ अविश्वास में नहीं रहेंगी। वह दिन आएगा, जब वे उद्धार पाएँगी और फिर से साटी जाएँगी और परमेश्वर के मार्ग पर लौट आएँगी, जहाँ वे एक जाति के रूप में, जातीय इस्राएल के रूप में, कभी प्रतिज्ञा की गई आशीष का अनुभव करेंगी।

गैर-यहूदी विश्वासी इस अर्थ में सम्मिलित नहीं किए जाते कि वे इस्राएल बन जाएँ। जातियाँ इस्राएली कैसे बनें? अपनी नई स्थिति में वे यहूदी विश्वासियों के समान आशीषों में सहभागी हैं, परन्तु उनकी नई स्थिति में न यहूदी है, न यूनानी, गलातियों 3:28।

जैतून के पेड़ के चित्र को, चाहे वह स्वयं परमेश्वर का बनाया हुआ है, बहुत अधिक नहीं खींचना चाहिए। **जैतून का पेड़ कुलपिताओं की आशीषों की व्यवस्था को दर्शाता है, अब्राहम की वाचा से नई वाचा तक। पेड़ का बढ़ना इतिहास का आगे बढ़ना है। जैतून का पेड़ इतिहास में से होकर जानेवाला एक प्रकार का आशीष-गलियारा है, जिसमें विश्वास के द्वारा प्रवेश मिलता है।** इस गलियारे में परमेश्वर के बहुत से विचार सम्मिलित हैं, कलीसिया भी, और यह उसके उस इतिहास के अंत तक ले जाता है, जिसे वह अपने सिंहासन की गुप्तता और संप्रभुता में स्वयं लिखता है।

परमेश्वर की परिपूर्णता: सब बातों का लक्ष्य

मसीह का अथाह धन सब बाँध तोड़ देता है और पूरे संसार को डुबो देता है – मनुष्यों को जलप्रलय की तरह डुबाने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें मसीह के इस अद्भुत धन से भरने के लिए, उन्हें मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया में साटने के लिए, और उन्हें वारिस बनाने के लिए, ताकि वे सब बातों के पुनःस्थापन का दिन देख सकें, जब मसीह समयों के अंत में सब बातों का सिर बनने के लिए आगे आएगा।

शब्द “परिपूर्णता” और “भरना”, और उनसे संबंधित शब्द भी, इस पत्री में कई बार आते हैं:

- अनुग्रह का धन, जिसे उसने हम पर **बहुतायत से** किया (1:8)

हमारा परमेश्वर देनेवाला परमेश्वर है, जो अपने **बड़े** प्रेम के कारण अपनी अपार भरपूरी से देता है।

- ... कलीसिया, जो उसकी देह है, उसकी **परिपूर्णता**, जो सब में सब कुछ **भरता** है (1:23)

यहाँ कलीसिया को यह साँस रोक देनेवाला विशेषाधिकार है कि वह मसीह को परिपूर्णता तक पहुँचाए। ऐसा नहीं कि उसे कभी किसी की आवश्यकता होती, परन्तु बात यह है कि कलीसिया उसकी देह है। परमेश्वर महिमा पाए मनुष्य यीशु को लेता है और उसे कलीसिया को उपहार के रूप में देता है – अर्थात् कलीसिया का सिर होने के लिए। कलीसिया बदले में उसकी देह बनती है, जिससे वह **मनुष्य के रूप में** (परमेश्वर, अर्थात् पुत्र के रूप में नहीं) पूर्ण होता है। अध्याय 5 का एक और चित्र स्पष्ट करता है कि इसका अर्थ क्या है: मसीह कलीसिया के साथ वैसे ही जुड़ता है, जैसे पुरुष और स्त्री एक तन होते हैं, जैसे कभी आदम और हव्वा। कलीसिया के साथ मसीह परिपूर्णता तक पहुँचाया गया है, और हम सदा के लिए इस संबंध में रहेंगे। मसीह सदा इसी रूप में प्रकट होगा और कलीसिया के साथ इस संबंध में सदा देखा जाएगा – मनुष्यों, स्वर्गदूतों और परमेश्वर के द्वारा। वह सिर के रूप में अपनी देह के साथ मिलकर सब कुछ भरेगा। पूरा ब्रह्मांड उसकी सर्वव्यापकता और उसकी आशीष की यह छाप धारण करेगा।

- ... ताकि तुम **परमेश्वर की सारी परिपूर्णता तक भर जाओ** (3:19)

यह हमारे लिए परमेश्वर का लक्ष्य और आशीष है। केवल परमेश्वर में हम परिपूर्णता और विश्राम तक पहुँचते हैं। हम इसके सिवा कुछ नहीं चाहते कि उसकी सामर्थ्य से भर जाएँ, कि मसीह हमारे हृदयों में वास करे, और कि हम मसीह के प्रेम को जानें। परमेश्वर हमारे पास निवास बनाना, हमारा जीवन बदलना और अपनी परिपूर्णता को हमारे द्वारा दूसरों तक बहाना चाहता है। स्वयं परमेश्वर की सारी परिपूर्णता तक हम पृथ्वी पर नहीं पहुँचेंगे, परन्तु वह अभी से आरंभ हो जाती है।

परमेश्वर की परिपूर्णता कोई अवैयक्तिक वस्तु नहीं है, जैसा कुछ धर्मों में माना जाता है, बल्कि स्वयं त्रिएक परमेश्वर है, जैसे उसने अपने आप को यीशु में और बाइबल के द्वारा प्रकट किया है।

- जो उतरा, वही है, जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया, **ताकि सब कुछ भर दे!** (4:10)

अभी से वह सब कुछ भरता है; अदृश्य संसार, स्वर्गीय स्थान मसीह की विजय से व्याप्त हैं। चाहे शक्तियाँ अभी भी उत्पात मचाती हैं, उनके सामने एक छुड़ाई हुई कलीसिया के द्वारा मसीह की विजय का प्रदर्शन किया जाता है। उनके दिन गिने हुए हैं, और परमेश्वर के पुत्र के द्वारा सारी सृष्टि के भर दिए जाने के मार्ग में शीघ्र ही कोई बाधा न रहेगी।

- ... सिद्ध मनुष्य बन जाएँ, और **मसीह की परिपूर्णता** के डील-डौल तक बढ़ जाएँ (4:13)

केवल एक-एक विश्वासी ही परमेश्वर की परिपूर्णता में अपना लक्ष्य नहीं पाता। पूरी कलीसिया भी इसी प्रकार वृद्धि की इस गतिशील प्रक्रिया में रखी गई है। यहाँ भी लक्ष्य स्वयं मसीह की परिपूर्णता से कम नहीं है। मसीह की परिपूर्णता का अर्थ है कि वह कलीसिया को भरता है, उसमें व्याप्त होता है, उसे सुसज्जित करता है, उसका मार्गदर्शन करता है, उसे आशीष देता है और महिमा में उसे लक्ष्य तक पहुँचाता है।

- ... आत्मा से **परिपूर्ण** होते जाओ! (5:18)

यह आह्वान – कि हम अपने साथ कुछ होने दें – हमें इस ओर ले जाना चाहता है कि हम अपने जीवन से वह सब हटा दें, जो परमेश्वर और उसके लक्ष्यों से होड़ करता है। वह हमें तभी भर सकता है, जब हम अपने आप से और अपनी इच्छाओं से खाली हों। परन्तु तब वह पूरी तरह प्रभावी हो सकता है और जिस भी सेवा के लिए हम बुलाए जाएँ, उसके लिए अधिकार और योग्यता दे सकता है।

यह पत्री मसीह के धन से भरी है। यह धन हमें परमेश्वर से, मसीह से और आत्मा से भर देता है। इस प्रकार एक ओर जीवन के लिए हमारी अस्तित्वगत प्यास बुझती है (भजन संहिता 42:1-2; यूहन्ना 4:13-14; 7:37-39), और इस प्रकार परमेश्वर हमारे साथ अपने लक्ष्य तक पहुँचता है; अर्थात् केवल परमेश्वर से भरे हुए लोगों के रूप में ही हम परमेश्वर का अनुकरण करनेवाले होंगे।

पुराने नियम की प्रतिरूप-विद्या (टाइपोलॉजी) और इफिसियों की पत्री: क्या सचमुच संभव?

पुराना नियम हमें इस पत्री की शिक्षा का एक विश्वसनीय और स्पष्ट करनेवाला पूर्व-चित्र देता है। इस शिक्षा में विश्वासियों का वर्णन ऐसे लोगों के रूप में किया गया है, जो पहले ही स्वर्ग में पहुँचाए जा चुके हैं। इसका प्रतिरूप इस्राएल की प्रजा के कनान में प्रवेश में पहले से दिखाया गया है। यह प्रतिज्ञा का देश अत्यंत उपजाऊ था, जैसी गवाही भेदियों ने पहले ही दी थी। परन्तु वहाँ शक्तिशाली शत्रु भी थे। यह उन स्वर्गीय स्थानों के अनुरूप है, जिनमें हम मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा प्रवेश कर चुके हैं। शक्तिशाली शत्रु उन दुष्ट प्रधानताओं और अधिकारों के अनुरूप हैं, जिनकी व्याख्या पहले की गई। यरदन नदी मृत्यु का चित्र है, जिसे देश में पहुँचने के लिए पार करना आवश्यक था। यहोशू प्रभु यीशु का प्रतिरूप है, परमेश्वर के सिंहासन पर विजेता के रूप में (इफिसियों 1)।

इस प्रतिरूप से स्पष्ट होता है कि यह स्थिति कितनी वर्तमान और आत्मिक वास्तविकता है। स्वर्गीय स्थान दूर नहीं हैं, क्योंकि आत्मिक संघर्ष भी और स्वर्गीय आशीष का आनन्द भी हमारे जीवन में, कलीसिया में, हमारे कार्यस्थल पर और हमारे घरों में होता है। इसलिए हमें स्वर्गीय स्थानों के विषय में इस शिक्षा की व्याख्या भौगोलिक या ब्रह्मांडीय रूप से नहीं, बल्कि आत्मिक रूप से करनी है। व्यावहारिक दृष्टि से स्वर्ग दूर नहीं है; वह उतना ही निकट है, जितना स्वयं मसीह, जो मेरे हृदय में वास करता और कार्य करता है। इसीलिए पौलुस पत्री के हृदय में यह प्रार्थना भी करता है, “कि मसीह विश्वास के द्वारा हमारे हृदयों में वास करे” (3:17-19)।

अंत में, प्रतिरूप-विद्या में हमारी मसीही स्थिति और जीवन का एक समग्र दृश्य: हम संसार (मिस्र) से यीशु की मृत्यु (लाल समुद्र) के द्वारा बचाए गए और जंगल में लाए गए हैं। जिस संसार में हम हैं, वह हमारे लिए जंगल बन गया है। वहाँ वास्तव में हमारा स्थान नहीं है, क्योंकि यीशु कहता है कि हम संसार के नहीं हैं। हम यात्रा पर हैं, लक्ष्य की ओर विश्वास के मार्ग पर – अपने प्रभु के स्वर्गीय राज्य की ओर। फिर भी उसी समय यह भी सत्य है कि मसीह की मृत्यु और उसके जी उठने के द्वारा हम उसमें स्वर्गीय स्थानों – क्षेत्रों – में हैं।

इस्राएल के लिए केवल एक ही बात लागू हो सकती थी; हमारे लिए दोनों लागू होती हैं, अर्थात् जंगल और कनान एक साथ। लाक्षणिक अर्थ में हमारे पाँव जंगल की रेत में हैं, और हमारा सिर, या बेहतर कहें तो हमारा हृदय, स्वर्ग में है (जहाँ हमारा धन है)।

मसीह सिर: एकता, कार्य और प्रतिनिधित्व

इस पत्री में मसीह के सिर होने के गुण को कम से कम 2 प्रकार से दिखाया गया है: 1. सब सृजी हुई वस्तुओं के ऊपर सिर के रूप में (1:10, 22) और उसकी देह, अर्थात् उसकी कलीसिया के सिर के रूप में (1:23)।

सिर (यूनानी में यह मनुष्य के जैविक “सिर” के सिवा और कुछ नहीं) के विभिन्न पहलू हैं:

1. एकता: सिर और शरीर की। यह चित्र एक जैविक और जीवित एकता की बात करता है।
2. कार्य: मनुष्य की जैविक एकता में सिर और शरीर एक निश्चित व्यवस्था में रखे गए हैं, और हर भाग के अपने निश्चित कार्य और ज़िम्मेदारियाँ हैं। इसमें पदानुक्रम का पहलू भी है, जिसमें सिर सबसे ऊपर है।
3. प्रतिनिधित्व: किसी मनुष्य का प्रायः चेहरा ही हमें याद रहता है। सिर पूरे मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है (उदाहरण के लिए पासपोर्ट फ़ोटो)। किसी राज्य का (सर्वोच्च) प्रमुख, (जर्मनी में) संघीय राष्ट्रपति, संसार की अन्य जातियों के सामने प्रतिनिधित्व के कार्य करता है।

ये 3 पहलू लगभग सदा वहाँ फिर से पाए जा सकते हैं, जहाँ मसीह को सिर कहा गया है।

रोचक यह है कि यूनानी शब्द (*kephale* κεφαλή) उस समय कैसे प्रयोग किया जाता था। मनुष्य और पशु के सिर के अतिरिक्त यह उसे दर्शाता था, जो उत्कृष्ट है और जो पहले या ऊपरी स्थान पर है (उदाहरण के लिए इफिसियों 5:23 आदि)। इसी प्रकार यह शब्द नदी के मुहाने के लिए, किसी स्रोत के लिए, किसी बात के उद्गम के लिए या किसी युग के आरंभ के लिए भी प्रयोग किया जाता था।

पुराने नियम में पिताओं को अपने परिवारों के प्रधान (सिर) कहा गया है (उदाहरण के लिए गिनती 1:4)।

परमेश्वर ने इस्राएल को सब जातियों का सिर होने के लिए ठहराया था, अर्थात् जातियों के ऊपर या उनके बीच एक विशिष्ट स्थान लेने के लिए, व्यवस्थाविवरण 28:13। यहाँ बात पदानुक्रम वाली स्थिति की कम, और परमेश्वर के विषय में जातियों के लिए ज्योति होने की अधिक है। नए नियम में शब्द "सिर" मसीह पर लागू किया गया है। जब उसे सिर कहा जाता है, तो वह सदा मनुष्य के रूप में ऐसा है, क्योंकि सिर के रूप में वह सदा मनुष्यों से एक संबंध में है। वह अपने पूरे किए गए छुटकारे के कार्य के आधार पर, महिमा पाए और सिंहासन पर विराजमान मनुष्य के रूप में सिर है।

- वह "कोने का सिरा" है, अर्थात् कोने का पत्थर, जिसके अनुसार सब कुछ सीधा होता है और होना ही चाहिए। वह सब कुछ एक साथ थामे रखता है। परमेश्वर ने उसे यही बनाया, जब राजमिस्त्रियों ने उस पत्थर को, मसीह को, ठुकरा दिया। इस प्रकार परमेश्वर ने उसे पूरे संसार के लिए उद्धार का एकमात्र स्रोत बनाया। आकाश के नीचे किसी दूसरे नाम में उद्धार नहीं, प्रेरितों के काम 4:11-12।
- रोमियों 5 में पद 12 से हम मसीह को आदम के आमने-सामने एक सिर के रूप में भी पाते हैं। यद्यपि वहाँ शब्दशः सिर की बात नहीं है, फिर भी पहचाना जा सकता है कि आदम पाप में गिरे मनुष्य का सिर, अर्थात् उसका आरंभ और उद्गम है। मसीह एक नई और छुड़ाई हुई मानवजाति का आरंभ और कर्ता है।
- मसीह देह, अर्थात् चर्च/कलीसिया का सिर है। पित्तोकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के द्वारा सब विश्वासियों ने एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया (1 कुरिन्थियों 12:13) और वे स्वर्ग में महिमा पाए मसीह से, जो देह का सिर है, जोड़े गए। देह के सिर के रूप में मसीह पृथ्वी पर कलीसिया के लिए स्वर्गीय स्रोत है, जिससे वह सब पाती है, जिसकी उसे पृथ्वी पर अपना कार्य पूरा करने के लिए आवश्यकता है। सिर की भूमिका देह पर शासन करने की नहीं, बल्कि प्रदान करने, पालन-पोषण, देखभाल और प्रेम की है। यही पति और पत्नी के लिए उनके विवाह में भी ठीक-ठीक आदर्श है। मेरा सिर मेरी देह पर शासन नहीं करता; मेरे शरीर को मेरे मस्तिष्क की आज्ञा मानने के लिए विवश नहीं किया जाता। सिर और देह का सार जीव की एकता है, पूरे का स्वचालित कार्य। मस्तिष्क के आदेश स्वतः, बिना दबाव और अधीनता के पूरे होते हैं। क्योंकि मस्तिष्क संचालन करता है, इसलिए सिर का विशेष महत्व है, और फिर भी न सिर देह के बिना कुछ है, न देह सिर के

बिना – जैसा पौलुस एक बार पुरुष और स्त्री के विषय में कहता है। कलीसिया यहाँ पृथ्वी पर अपने स्वर्गीय सिर, मसीह, का प्रतिनिधित्व करती है। और इसी प्रकार स्वर्ग में मसीह परमेश्वर और स्वर्गदूतों के सामने कलीसिया का प्रतिनिधित्व करता है।

भविष्य के 1000 वर्ष के राज्य में **और** नई सृष्टि में सब बातों के सिर के 3 पहलू इस प्रकार दिखाई देते हैं:

1. एकता: न सृष्टि के भीतर कोई विभाजन और कोई दरार रहेगी, न परमेश्वर से सृष्टि का कोई विभाजन। सिर के बिना सब वस्तुएँ मानो मरी हुई थीं, परमेश्वर के लिए अनुपयोगी और मूल्यहीन। मसीह के साथ संबंध और एकता में, जैसे सिर देह से जुड़ा होता है, सब कुछ पुनःस्थापित किया जाएगा और परमेश्वर के पास लौटाया जाएगा।

2. कार्य: क्योंकि सिर और देह की एकता अस्तित्व के हर कोने तक पूरा प्रभाव संभव बनाती है, इसलिए सब कुछ प्रभु यीशु की छाप लिए होगा। सब कुछ वैसे ही चलेगा, जैसे वह चाहता है।

सब बातों के सिर के रूप में वह नदी के मुहाने की तरह आशीष की एक अजेय, चौड़ी और गहरी धारा सब बातों में बहाएगा; सब कुछ प्रभु यीशु मसीह की महानता और आशीष की परिपूर्णता में डुबो दिया जाएगा।

3. प्रतिनिधित्व: वह सब बातों को पूरी समरसता में परमेश्वर के पास ले आएगा। तब परमेश्वर की सिद्ध रूप से और सदा के लिए महिमा होगी। तब मसीह के द्वारा, जिससे परमेश्वर पूरी तरह प्रसन्न है, सब बातों पर परमेश्वर की प्रसन्नता होगी। जैसे परमेश्वर अपने मसीह को देखता है, वैसे ही तब वह सब बातों को देखेगा। यह पहले कभी न हुई अवस्था कभी समाप्त नहीं होगी। पुरानी बातें बीत गईं; देखो, सब कुछ नया हो गया है।

5 वरदान: प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार-प्रचारक, चरवाहे और शिक्षक – क्या आज भी?

इफिसियों की पत्री का एक मुख्य विषय मसीह की देह के रूप में कलीसिया है। यह तथ्य कि यह देह कलीसिया के इतिहास के 2000 वर्षों के बाद आज भी अपने व्यावहारिक रूप में विद्यमान है (यद्यपि दुःख की बात है कि एक देह की एकता में अब दिखाई नहीं देती), इसका कारण यह है कि महिमा पाए मसीह ने अपनी देह को वरदान दिए हैं। ये वरदान प्रमाणित करते हैं कि मसीह कलीसिया का महिमा पाया हुआ सिर है।

रोचक बात यह है कि यहाँ दो “प्रकार” के वरदानों की बात है: 1. हर एक के पास एक वरदान है, जो अत्यधिक महत्व का है (4:7), और 2. ऐसे विश्वासी हैं, जो व्यक्ति के रूप में कलीसिया के लिए मसीह के वरदान हैं। ये वरदान ऐसे मनुष्य हैं, जिनमें प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार-प्रचारक, चरवाहे और शिक्षक की योग्यता उनके आसपास के सब लोगों को पहचान में आती है।

इस संदर्भ में निस्संदेह इस विषय के दोनों अन्य मुख्य पाठों, अर्थात् 1 कुरिन्थियों 12 और रोमियों 12 को भी लेकर तुलना करनी चाहिए। वहाँ यहाँ बताए गए वरदानों से अधिक अनुग्रह-वरदान मिलते हैं। फिर भी ये सबसे महत्वपूर्ण या शायद सबसे बड़े वरदान प्रतीत होते हैं, विशेषकर तब, जब यहाँ उन्हें सीधे व्यक्ति के साथ एक माना गया है।

यह अच्छी तरह कल्पना की जा सकती है कि इन वरदानों का अर्थ क्या है और उनकी योग्यता किसमें है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या ये वरदान, अर्थात् सभी 5, आज भी मसीह के द्वारा कलीसिया को दिए जाते हैं।

सामान्यतः कहा जाता है कि पहले 2 वरदान अब नहीं दिए जाते। प्रेरितों की संख्या निश्चित थी, 12 और 1। भविष्यद्वक्ता भी अब नहीं हैं, क्योंकि पवित्रशास्त्र का संग्रह (कैनन) पूरा हो चुका है और लगभग सब मसीहियों को उपलब्ध है। प्रेरितों का कार्य, या कलीसिया के लिए उनका वरदान, आज भी उनके लेखों, अर्थात् नए नियम में विद्यमान है।

एक दूसरा दृष्टिकोण मानता है कि सभी 5 वरदान आज भी दिए जाते हैं। मूल रूप से यह कथन कालातीत और सदा मान्य भी पढ़ा जाता है। कलीसिया आज तक इन 5 (व्यक्ति-रूपी) वरदानों की और उन अनुग्रह-वरदानों की सहायता से चलती है, जो हर अंग के पास हैं।

यह तथ्य कि बरनबास को एक बार पौलुस के साथ एक ही साँस में प्रेरित कहा गया है (प्रेरितों के काम 14:14), और कि पौलुस कई प्रेरितों की बात करता है, जो उसके साथ थिस्सलुनीके में थे (1 थिस्सलुनीकियों 2:6), और कि अन्तुनीकुस और यूनियास को संभवतः प्रेरितों में गिना जाता है (रोमियों 16:7), इस निष्कर्ष की अनुमति देता है कि केवल 12+1 प्रेरित नहीं थे।

इस दृष्टिकोण में आज के प्रेरित निस्संदेह वे नहीं हैं, जो कोई प्रेरितिक परंपरा आगे बढ़ाते हैं, जैसा उदाहरण के लिए न्यू-अपोस्टोलिक चर्च में किया जाता है। आज के प्रेरितों ने यीशु को अपनी शारीरिक आँखों से भी नहीं देखा। मेमे के 12 प्रेरितों की अनन्त नगर की नींव में सदा के लिए एक विशेष स्थिति या स्मृति रहेगी। आज प्रेरितों का वह महत्व नहीं है, जो पहली शताब्दी में था, फिर भी उनकी सेवा के गुण मिलते-जुलते हैं।

आज के प्रेरितों में मैं उन्हें गिनता हूँ, जो जागृतियों के आरंभ में खड़े होते हैं, जो कलीसियाएँ स्थापित करते हैं, जो मसीही जगत के अगुवे हैं। निश्चय ही उनके पास प्रेरितिक अधिकार नहीं है, परन्तु जब देह की वृद्धि की बात आती है, तो उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पर एक उद्धरण (थॉमस जेटेल (Thomas Jettel)): "शब्द (apostolos ἀπόστολος संदेशवाहक; भेजा हुआ दूत) नए नियम में विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया गया है। यीशु ने बारहों को अपने पहले संदेशवाहकों के रूप में नियुक्त किया। पौलुस को भी सीधे प्रभु ने एक विशेष संदेशवाहक के रूप में नियुक्त किया (गलातियों 1; 2 कुरिन्थियों 12:12)। याकूब की भी एक विशेष स्थिति प्रतीत होती है (1 कुरिन्थियों 15:7; गलातियों 1:19)। ये नींव डालनेवाले प्रेरित थे (इफिसियों 2:20; 3:5), मानो पहली श्रेणी के, पहले दर्जे के प्रेरित; उन्होंने अपना संदेश सीधे प्रभु से पाया। परन्तु नया नियम शब्द प्रेरित को उन्हीं तक सीमित नहीं करता। दूसरे, जैसे बरनबास (प्रेरितों के काम 14:4; तुलना करें गलातियों 2:8-9), सीलास और तीमुथियुस (प्रेरितों के काम 17:1, 4; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1-2; तुलना करें 2:6-7) और तीतुस (तीतुस 1:5; 3:12), एक व्यापक अर्थ में "प्रेरित" कहलाते हैं। उनके पास वही गुणवत्ता और अधिकार नहीं था, पर वे नींव डालनेवाले प्रेरितों जैसा ही कार्य करते थे। वे सुसमाचार-प्रचारक और शिक्षक थे, नए समूहों को मार्ग दिखाते थे, शिक्षकों के रूप में घूमते-फिरते थे। उनका कार्य अगुवाई का था, परन्तु किसी एक स्थान से बँधा नहीं था। इस समूह को "मिशनरी शिक्षक" भी कहा जा सकता है।"

यही बात भविष्यद्वक्ताओं पर भी लागू होती है। इस वरदान के विषय में हम थोड़ा ही जानते हैं, केवल यह कि तीनों संबंधित (वरदान-)पाठ (इफिसियों 4, 1 कुरिन्थियों 12, रोमियों 12) इसे सम्मिलित करते हैं। नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख इसके अलावा केवल यहाँ है:

प्रेरितों के काम 13:1: अन्ताकिया में, वहाँ की कलीसिया में, **भविष्यद्वक्ता** और शिक्षक थे: बरनबास और शमौन, जो नीगर कहलाता था, और कुरेनी लूकियुस, और मनाहेम, जो चौथाई देश के राजा हेरोदेस के साथ पला था, और शाऊल।

प्रेरितों के काम 15:32: और यहूदा और सीलास ने, जो आप भी **भविष्यद्वक्ता** थे, बहुत सी बातों से भाइयों को उपदेश देकर उन्हें दृढ़ किया।

पहली शताब्दी में भविष्यद्वक्ता वे भी थे, जो जब तक नया नियम उपलब्ध नहीं था, सत्य प्रकट करते थे, अर्थात् आगे पहुँचा सकते थे। वे भी, जो प्रेरित नहीं थे, पर जिनकी पत्रियाँ, जैसे याकूब और यहूदा की, नए नियम में आईं, ऐसे कहे जा सकते हैं। नए नियम के संग्रह (कैनन) के पूरा होने के बाद आज इस सेवा की आवश्यकता नहीं है, और इसलिए प्रेरणा से पवित्रशास्त्र देने की यह सेवा अब नहीं है।

आज के भविष्यद्वक्ता वे हैं, जो – और इसमें वे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान हैं – युग की आत्मा (ज़माने की सोच) को पहचानने और प्रकट करने में समर्थ हैं, जो मसीही जगत में खतरनाक प्रवृत्तियों को उजागर करते और उनकी निंदा करते हैं। ऐसे लोग इसलिए असुविधाजनक भी होते हैं, क्योंकि वे घाव पर उँगली रखते हैं। उनकी सेवा उपदेश और चेतावनी है। वे भविष्य की घटनाओं की भविष्यद्वक्ता नहीं करते और कोई नए सत्य भी प्रकट नहीं करते। यह नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं की, अर्थात् हमारे दिनों के भविष्यद्वक्ताओं की भी, सेवा न थी, न है।

नया मनुष्य: वह कहाँ और कैसे दिखाई देता है

न धर्मों ने, न शिक्षा ने, न राजनीति ने और न किसी आनुवंशिकी ने एक नया मनुष्य उत्पन्न किया है, यद्यपि इसका बार-बार प्रयास किया गया। जो कोई मनुष्य के विषय में – उसमें, जो वह सदा था और जो आज भी उसकी पहचान है और जो वह करता है – वस्तुनिष्ठ रूप से सोचने का प्रयास करता है, वह अनिवार्य रूप से एक नए मनुष्य की आवश्यकता तक पहुँचेगा।

सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने पाप में गिरे, पाप में जीनेवाले मनुष्य की “मरम्मत” या “सुधार” नहीं किया। व्यवस्था भी यह नहीं कर सकी, बल्कि उसने केवल उसके न सुधर सकने की पुष्टि की। पुराना मनुष्य अब सुधारा नहीं जा सकता। गुलगुता का कूस पुराने मनुष्य का अंत है। मसीह हमारे स्थान पर पुराने मनुष्य का न्याय और मृत्यु अपने ऊपर लेता है। मसीह के पुनरुत्थान में एक नया मनुष्य निकलता है – हम उसकी उत्कृष्ट रचना हैं, एक नई सृष्टि – जो स्वयं परमेश्वर के अनुरूप सृजा गया है (4:20-24; रोमियों 6:1-11; गलातियों 5:16-26)। यह पहले, और जब तक हम पृथ्वी पर जीते हैं, हमारे हृदय से, भीतरी मनुष्य से संबंधित है, अभी उसकी देह से नहीं। यह मनुष्य की सोच से, जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण से, उसकी इच्छा से, उसकी भावनाओं से भी संबंधित है। परन्तु नया अपने व्यावहारिक प्रभाव में तुरंत पूरी तरह और संपूर्ण रूप से विद्यमान नहीं होता, मानो हम एक ही झटके में सिद्ध बना दिए गए हों। नया हम में एक बीज की तरह रखा जाता है, जिसे बढ़ना है। आत्मा की और उस जीवित वचन की सामर्थ्य, जिसके द्वारा हम नए सिरे से जन्मे, यीशु के स्वरूप में एक स्थायी और निरंतर परिवर्तन उत्पन्न करती है। इफिसियों से पौलुस “तुम्हारे मन की आत्मा में नए होते जाने” की बात करता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया के **2 पक्ष** हैं: एक ओर यह परमेश्वर का कार्य और उसकी सामर्थ्य है, जिस पर हमें भरोसा रखना है, ताकि हम नवीनीकरण की इस प्रक्रिया का अनुभव करें। परन्तु दूसरी ओर हमें पूरी तरह ज़िम्मेदार ठहराया जाता है और आह्वान किया जाता है कि हम वही करें, वैसे ही कार्य करें और निर्णय लें, जैसा इस नए मनुष्य के अनुरूप है। दूसरे शब्दों में: हम ऐसे परिश्रम करते हैं, मानो सब कुछ हम पर निर्भर हो, और इसमें हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, जिसके कार्य के बिना कुछ भी सफल नहीं हो सकता। इसी अर्थ में यीशु, सच्ची दाखलता, परमेश्वर के लिए फल की बात करते हुए कहता है: “मुझ से अलग होकर, या मेरे बाहर, तुम कुछ भी नहीं कर सकते।”

इस प्रकार नया जन्म होने से नया मनुष्य मेरा नया व्यक्तित्व है, परन्तु एक पुराने परिवेश में। मेरा परिवेश नहीं बदला; मैं बदला गया हूँ और एक आत्मिक वृद्धि की प्रक्रिया में निरंतर बदलता जाता हूँ।

इस प्रकार पौलुस नए जीवन का वर्णन करता है, जैसा वह हमारे परिचित जीवन- या सामाजिक संबंधों में दिखाई देता है:

अध्याय 4:1-16: कलीसिया में, मसीह की देह में

यहाँ नया जीवन इस बात का ध्यान रखता है कि अपने आप को पीछे रखे, और कलीसिया के जीवन में अपनी बात न मनवाए, न दूसरों की उपेक्षा करे। व्यवहार कलीसिया की व्यावहारिक एकता को बनाए रखने में सहायक होना चाहिए। इसी प्रकार हर अंग कलीसिया की आत्मिक वृद्धि को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी में सम्मिलित है, क्योंकि हर एक को मसीह से एक वरदान मिला है।

अध्याय 4:17-24: संसार से मूलभूत अंतर

परमेश्वर से दूर, संसार में जीए गए जीवन और परमेश्वर से मिले जीवन – स्वर्गीय पिता के साथ पुत्र की संगति में जीए गए जीवन – से बड़ा विरोध शायद ही हो सकता है। दोनों जीवन-रूपों की सार्थकता और स्थायित्व दिन और रात की तरह भिन्न हैं।

अध्याय 4:25-32: नए जीवन के लिए आज्ञाएँ: बोलना, काम करना, क्षमा करना

पौलुस विभिन्न विवरण दिखाना आरंभ करता है कि नया जीवन दैनिक जीवन में कैसे अपना मार्ग बनाता है। क्रोध और चिल्लाना, भड़कना और कड़वाहट केवल एक पुराने जीवन के हो सकते हैं, जहाँ कोई सच्चा अर्थ और प्रेम नहीं है। चोरी अतीत की बात हो जानी चाहिए; हमारा बोलना सकारात्मक और उन्नति करनेवाला है। वह नीचे नहीं, ऊपर की ओर खींचता है।

अध्याय 5:1-14: परमेश्वर का अनुकरण करनेवाले: चुटकुले, यौनता, ज्योति / अंधकार

एक भक्तिहीन संसार में हमें परमेश्वर का अनुकरण करनेवालों से कम कुछ नहीं होना है। गंदे चुटकुले, एक टेढ़ी और कुटिल पीढ़ी की गंदगी और कीचड़ में आनन्द – यह अब हमसे सुनाई नहीं देता। यौनता परमेश्वर का एक मूल्यवान और साथ ही बहुत नाजुक उपहार है। संसार के साथ अब कोई स्वेच्छा से हृदय की संगति नहीं है। बल्कि संसार में ज्योतियों के रूप में हम ज्योति और दिन की ओर मार्ग दिखानेवाले हैं।

अध्याय 5:15-21: समय का सदुपयोग, शराब, कलीसिया में आराधना

परमेश्वर विशेष क्षण देता है, ताकि वह हमारे द्वारा अपने आप को दिखाए – ऐसे काम, जिन्हें उसने पहले से तैयार किया है, कि हम उनमें चलें। परमेश्वर की और ज्योति की सन्तान बिना योजना और निष्क्रिय होकर नहीं जीते। वे उपलब्ध समय का उपयोग करते हैं, सोच-समझकर, अर्थ और उस बुद्धि के साथ कार्य करते हैं, जो उनमें नई की गई है। वे परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं। वे शराब से अपने आप को नहीं भरते, जो आलसी और असंयमी बनाती है और प्रभु के निकट नहीं लाती।

किसी नशीले पदार्थ के बदले आत्मा को हमें पूरी तरह भरना और परिपूर्ण करना चाहिए। तब हम कलीसिया में दूसरों के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं। तब भरे हुए हृदय से सच्ची हार्दिक स्तुति और धन्यवाद संभव होता है। यह

न केवल हमारी अपनी, बल्कि उन सबकी उन्नति करता है, जो इसे सुनते हैं।

अध्याय 5:22-33: पुरुष और स्त्री का विवाह – मसीह और कलीसिया

विवाह जीवन भर का कार्य है, जो अपने आप या स्वचालित रूप से अच्छा नहीं चलता। उस समय स्त्री संपत्ति थी, जिस पर पूर्ण आज्ञाकारिता का दायित्व था। प्राचीन काल में पुरुषों के लिए अपनी पत्नियों से प्रेम करने की कोई आज्ञा नहीं थी। परन्तु सुसमाचार की ज्योति पत्नियों को इस स्थिति से बाहर निकालती है: पुरुष अपनी पत्नियों से प्रेम करें, और वह भी ऐसे मानदंड के अनुसार, जिससे बढ़कर कुछ नहीं हो सकता: जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया।

दूसरी ओर, स्त्रियाँ अब यह न सोचें कि सुसमाचार की ज्योति और स्वतंत्रता में वे पुरुष के विरुद्ध विद्रोह कर सकती हैं। उन्हें भी मसीह और कलीसिया के आदर्श को अपने ऊपर लागू करना चाहिए: जैसे कलीसिया देह के रूप में सिर (मसीह) के अधीन है, वैसे ही स्त्रियाँ भी अपने पतियों के अधीन रहें। पुरुषों और स्त्रियों से संबंधित, मसीह के अनुकरण में किया गया सारा व्यवहार स्वेच्छा से और बिना दबाव के, नए किए गए हृदयों के दृढ़ विश्वास से होता है।

अध्याय 6:1-4: बच्चे और पिता

बच्चे, चाहे विश्वासी हों या नहीं, माता-पिता की आज्ञा मानें। यह उनके लिए आशीष का कारण होगा। इस्राएल को दिए गए दस वचनों की छठी आज्ञा लागू होती है: कालातीत और सदा मान्य, माता-पिता और बच्चों के जीवन और आशीष के लिए एक आज्ञा।

पिता, अर्थात् माता-पिता, बच्चों के साथ प्रेम से, पर दृढ़ता से व्यवहार करें, ताकि उनमें साहस रहे और वे बड़े हों, प्रभु को ग्रहण करें और उसके पीछे चलें, और बस बड़े (वयस्क) हो जाएँ, ताकि एक दिन स्वतंत्र रूप से जी सकें और स्वयं परिवार बसा सकें।

अध्याय 6:5-9: काम के संबंध: स्वामी - दास, विश्वासी - अविश्वासी

यद्यपि आज दासता इस रूप में नहीं रही और सुसमाचार के प्रभाव के कारण समाप्त कर दी गई है, हम इन आह्वानों से ऐसे सिद्धांत लेते हैं, जो आज के काम के संबंधों पर भी लागू होते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत साथ ही बिल्कुल सरल भी है: हर मसीही पहले अपने स्वर्गीय प्रभु के प्रति उत्तरदायी है। हम मनुष्यों को नहीं, बल्कि अपने अनन्त प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं। परन्तु अधिकांश मामलों में उसे प्रसन्न करने का अर्थ पार्थिव स्वामी की आज्ञा मानना होगा। मालिक के प्रति लगातार आलोचना या हृदय में कुढ़न मसीही की पहचान नहीं है। यह एक जटिल विषय है, परन्तु मसीही सोचता है कि वह यहाँ भी प्रभु और सुसमाचार का गवाह कैसे हो सकता है।

अध्याय 6:10-20: हर मोर्चे पर आत्मिक संघर्ष

अंत में, एक आह्वान और व्यावहारिक विश्वास-जीवन के विषय में अब तक कही गई सब बातों के सारांश के रूप में, पौलुस इस ओर संकेत करता है कि आत्मिक और अदृश्य मोर्चा जीवन के सब क्षेत्रों और जीवन की सब परिस्थितियों में से होकर गुजरता है। बहुत से मसीही अदृश्य संसार से आनेवाले खतरे को नहीं समझते और ऐसे जीते हैं, मानो शैतान ही नहीं। पौलुस मानो कहता है कि वह इस पत्री में जीवन की हर परिस्थिति को समेट नहीं

सकता। परन्तु इसके बदले वह हमें परमेश्वर के हथियार दिखाता है, जिनसे हम जीवन की हर परिस्थिति और हर खतरे में प्रभु में स्थिर रह सकते हैं।

प्रधानताएँ और अधिकार: वह दुष्ट और अदृश्य, स्वर्गीय संसार

नए नियम में ऐसी कोई पत्री नहीं है, जिसमें इतनी बार ऐसे शब्द आते हों, जो अदृश्य संसार में व्यक्तिगत आत्मिक शक्तियों की बात करते हैं। दूसरी पत्रियाँ, पौलुस की भी, इसके विषय में बात करती हैं (उदाहरण के लिए रोमियों 8:38; कुलुस्सियों 1:16; 2:15; 1 पतरस 3:22), परन्तु इतनी बार नहीं; और यह इस पत्री की एक पहचान है।

आइए, पौलुस को बोलने दें और उन सब पाठों को उद्धृत करें, जो इन प्राणियों का नाम लेते हैं:

- ... और उसने उसे (मसीह को) स्वर्गीय स्थानों में अपने दाहिने बैठाया, **हर एक प्रधानता** (πᾶσις ἀρχὴς *pases arches*) और हर एक **अधिकार** (ἐξουσία *exousias*) और **सामर्थ्य** (δυνάμεις *dunameos*) और **प्रभुता** (κυριότητος *kuriotet0s*) और हर एक **नाम** (*onoma*) के ऊपर, जो लिया जाता है, न केवल इस युग में, बल्कि आनेवाले युग में भी, और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया ..., 1:21-22।

मसीह मनुष्य के रूप में हर एक और हर कल्पनीय आत्मिक व्यक्तित्व से ऊपर उठाया गया है। ये परमेश्वर की सृष्टि में एक ऊँचा स्थान रखते हैं, परन्तु मसीह का स्थान उनसे ऊपर है, क्योंकि वह परमप्रधान के सिंहासन पर, परमेश्वर के दाहिने है।

- ... आकाश के अधिकार के अधिपति, अर्थात् उस आत्मा के अनुसार, जो अब आज्ञा न माननेवाले पुत्रों में कार्य करता है ..., 2:2

शक्तियाँ संसार की घटनाओं पर ठोस और भारी प्रभाव डालती हैं। वे केवल सरकारों के केंद्रों को ही नहीं, बल्कि साधारण मनुष्य को भी प्रभावित करती हैं – अर्थात् उन सबको, जो आत्मिक रूप से मरे हुए हैं और इसलिए शक्तियों के वश में हैं। यहाँ वे स्पष्ट रूप से परमेश्वर-विरोधी, अर्थात् शैतानी सिद्ध होती हैं। यदि इन प्राणियों में कोई अधिपति है, तो वह केवल शैतान ही हो सकता है। और पवित्रशास्त्र भी यही कहता है: मत्ती 25:41।

- ... ताकि अब कलीसिया के द्वारा स्वर्गीय स्थानों में **प्रधानताओं** और **अधिकारों** पर परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान प्रकट किया जाए, ... 3:10

पूरे अदृश्य संसार के सामने परमेश्वर का उद्धार-कार्य और उसका परिणाम, अर्थात् कलीसिया, परमेश्वर की बुद्धि की घोषणा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। शक्तियों को चकित होकर और दाँत पीसते हुए हार माननी पड़ती है। विजय हमारे मसीह की है, और कलीसिया उसकी “लूट” है; शक्तियाँ हार गई हैं।

- जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर हर एक **घराने** का नाम रखा जाता है, ... 3:15

यद्यपि पहली दृष्टि में यहाँ इन शक्तियों की बात नहीं है, फिर भी यहाँ स्पष्ट किया गया है कि वे भी सृजे हुए प्राणी हैं और सृष्टिकर्ता से अपना नाम पाते हैं। यह इफिसियों के सामने स्पष्ट करता है कि ये शक्तियाँ स्वायत्त नहीं हैं, और न ही (सर्व)शक्तिमान देवता हैं, बल्कि सृष्टिकर्ता के अधीन हैं। इस संदर्भ में यह रोचक है कि जादू में आत्माओं को उनके नाम से संबोधित करना या उनका आह्वान करना महत्वपूर्ण था।

- “ऊँचे पर चढ़कर वह **बंधुआई** को बंधुआई में ले गया ... 4:8

यहाँ भी संदर्भ सीधे स्पष्ट नहीं है। परन्तु बंधुआई अंधकार की उस शक्ति के द्वारा थी, जिसे मसीह ने क्रूस और पुनरुत्थान के द्वारा तोड़ दिया। यहाँ यीशु का स्वर्गारोहण पूरे किए गए और विजयी छुटकारे के कार्य के बाद एक विजय-जुलूस है।

- ... **शैतान** (διᾱβολος *diabolos*) की युक्तियों (μεθοδεῖα *methodeia*) के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा संघर्ष मांस और लहू से नहीं, बल्कि **प्रधानताओं** (ἀρχαί *archai*) से, **अधिकारों** (ἐξουσία *exousia*) से, **इस अंधकार** (σκότος *skotos*) के **जगत-शासकों** (κοσμοκράτωρ *kosmokrator*) से, स्वर्गीय स्थानों में **दुष्टता की आत्मिक सेनाओं** (πρὸς τὰ πνευματικὰ τῆς πονηρίας *pneumatika tes ponerias*) से है। 6:11-

12

यहाँ शक्तियों के संबंध में पहली बार शैतान का नाम लिया गया है। वह इन शक्तियों का सर्वोच्च, उनका “सेनापति” है (तुलना करें: मत्ती 12:22 आगे)। इस प्रकार शक्तियों का मुखौटा उतर जाता है; स्पष्ट है कि वे सदा शत्रु हैं और हम में और पूरे संसार में परमेश्वर के काम को रोकने और हानि पहुँचाने के लिए सब कुछ करती हैं।

ऐसा कैसे है कि यह विषय इस पत्री में केंद्रीय है? इफिसी लोग हमारी तरह आज के किसी “प्रबुद्ध”, आधुनिक या उत्तर-आधुनिक समय में नहीं जीते थे। उनका जीवन, उस समय का समाज, इस नगर में, एशिया माइनर में, रोमी साम्राज्य में, मूर्तिपूजक पंथों की छाप लिए हुए था। इफिसुस समाज के सब वर्गों तक धर्म से व्याप्त था, और इन्हीं वर्गों से लोग मसीह पर विश्वास करने आए। जीवन अरतिमिस की सेवा से निर्धारित होता था, जिसे रोमी डायना कहते थे (चित्र देखिए)। इसके अतिरिक्त इफिसुस जादू और गुप्त प्रथाओं का एक केंद्र था। बी. एम. मेटज़गर (B. M. Metzger) कहते हैं: “सब यूनानी-रोमी नगरों में इफिसुस साम्राज्य का तीसरा सबसे बड़ा नगर है, और हर प्रकार के जादूगरों, टोनहों और धोखेबाज़ों के लिए सबसे आकर्षक स्थान, जिसकी कोई बराबरी नहीं।” लूका बताता है (नीचे देखिए) कि जिन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया, उन्होंने शपथ-मंत्रों और गुप्त विषयों वाली ऐसी जादू की पुस्तकों का एक बड़ा ढेर जला दिया। यहूदियों का भी अपना जादू था और वे भी इस आत्मिक अंधकार में सहभागी थे। यहूदी, यूनानी (हेलेनिस्टिक) और रोमी पंथों का मिश्रण आम बात थी (समन्वयवाद)। इसके साथ ज्योतिष था, उस भाग्य में विश्वास, जो तारों के द्वारा निर्धारित होता था। ये जीवन को निर्धारित करते थे; ये खतरनाक, वास्तविक और माँग करनेवाले थे। कोई भी वास्तव में इनसे मुक्त नहीं था। यह मूर्तिपूजा पौलुस द्वारा उल्लिखित शक्तियों का सेतु-शीर्ष, उनका साधन था, जिससे वे इफिसियों पर, समग्र रूप से मनुष्यों पर, सीधा प्रभाव डाल सकें। नाम लेकर संबोधित करने और शपथ-मंत्रों के द्वारा इन शक्तियों को वह करने का काम सौंपा जाता था, जिससे लोगों के लक्ष्य और लाभ, विशेषकर दूसरे मनुष्यों के विरुद्ध भी, पूरे हों। ये शक्तियाँ भय उत्पन्न करती थीं; उनकी “सर्वव्यापकता” के कारण कोई निश्चित नहीं रह सकता था।

अब प्रश्न ये थे: जिन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया, उनके साथ अब क्या स्थिति है? क्या शक्तियों का अब भी प्रभाव था? क्या मसीह शक्तियों के बराबर था, क्या वह उनसे श्रेष्ठ था, या उनसे कमज़ोर भी? क्या वे अब भी शक्तियों के वश में थे? उन्हें शक्तियों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए? या इन पंथों को अपने नए विश्वास के साथ बनाए रखना चाहिए?

इस समय की तुलना अन्य बातों के साथ हैती और अफ्रीका के वूडू पंथ से की जा सकती है, जहाँ लोग देवताओं के भय में जीते हैं। परन्तु जब वे सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तो यह बंधन और भय टूट जाता है। इन पंथों में और इनके द्वारा देवताओं का प्रभाव पश्चिमी संसार से भिन्न प्रकार से होता है। परन्तु पश्चिम में भी वह उतना ही वास्तविक है, चाहे उतना स्पष्ट न हो। वहाँ, हैती और अफ्रीका में, और पृथ्वी के बहुत से अन्य भागों में भी, लोग

देवताओं में विश्वास करते हैं; वे दैनिक जीवन का भाग हैं। हमारे यहाँ इन प्राणियों में विश्वास नहीं किया जाता। परन्तु ठीक यही तो पहले से एक बढ़त है, जो शैतान के पास मनुष्यों को दासत्व में रखने के लिए है।

हमारे क्षेत्रों में अंधकार का यह दासत्व और यह अधिकार अधिकांशतः दुष्टात्मा-ग्रस्तता से संबंधित नहीं है। हमारे समाज में यह संसार, मनुष्य की लालसाओं और अभिलाषाओं, और अदृश्य शक्तियों (2:2) का मिला-जुला कार्य है। संसार की व्यवस्था शैतान के द्वारा संचालित होती है, और इससे पहले ही एक ऐसा परिवेश बन जाता है, जिसमें मनुष्य परमेश्वर से दूर खिंच जाता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य स्वयं पाप चाहता है, न कि परमेश्वर को, जिसके अधीन उसे होना है। ये 2 पूर्व-शर्तें उन दुष्ट अदृश्य शक्तियों के लिए, जो वायु में, अर्थात् हमारे बिल्कुल आसपास कार्य करती हैं, सब संभावनाएँ खोल देती हैं कि वे इन सबको अपने पक्ष में और प्रबल करें। इसमें वे महत्वपूर्ण मुख्य स्थानों (सरकार, स्कूल, शिक्षा, तकनीक, अवकाश) पर, और प्रकृति पर भी ध्यान केंद्रित करती हैं, ताकि मनुष्य को हर प्रकार से हानि पहुँचाएँ। परन्तु अंततः यह उसी सीमा में होता है, जिसकी परमेश्वर अनुमति देता है। हमें कल्पना करनी चाहिए कि अदृश्य संसार में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह की मात्रा उस विद्रोह के समान है, जिसका अनुभव हम दृश्य संसार में करते हैं।

अंधकार के इन जगत-शासकों के आक्रमण का एक मुख्य लक्ष्य निस्संदेह वे हैं, जो उनके अधिकार से छीन लिए गए हैं, और जिन्हें वे अब पिता और पुत्र के हाथ से छीन नहीं सकते। क्योंकि विश्वासी वहाँ सुरक्षित हैं, इसलिए वे विश्वासियों के विश्वास-जीवन को, और सबसे बढ़कर सुसमाचार के लिए उनके उत्साह को नष्ट करने का प्रयास करती हैं। यही वह बात है, जिससे उन्हें डरना पड़ता है, क्योंकि सुसमाचार मनुष्यों को उनके अधिकार से स्वतंत्र कर सकता है। परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार इस बात का प्रमाण है कि उनके दिन गिने हुए हैं।

जब पौलुस विभिन्न शब्दों का उल्लेख करता है, जिनसे इन स्वर्गदूत-प्राणियों को संबोधित किया जाता है, तो वह ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है, जो स्वयं लोगों और पंथों में, अर्थात् यहूदियों और अन्यजातियों में, प्रचलित थे। इन प्राणियों के विषय में वह उस समय का विश्व-दृष्टिकोण अपनाता है, क्योंकि वह एक प्रकार से वास्तविकता के अनुरूप था। जो पौलुस नहीं करता, यद्यपि शायद हम यह चाहते, वह है स्वर्गदूतों के संसार के किसी पदानुक्रम का विस्तार से वर्णन, या शैतानी युक्तियाँ बनानेवाले उसके शैतानी उद्यम का कोई संगठन-चार्ट। शब्दों से एक पदानुक्रम का अनुमान होता है। अन्यजाति स्वर्गदूतों के संसार में ऐसा एक पदानुक्रम जानते थे। पौलुस केवल वही कहता है, जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, और बस शक्तिशाली, और इसलिए मनुष्यों से श्रेष्ठ, सृजे हुए प्राणियों की व्यक्तिगत वास्तविकता को मानकर चलता है। उसके लिए महत्वपूर्ण है कि वह इन शक्तियों का मसीह के अधीन किया जाना और उनकी तानाशाही से विश्वासियों की मुक्ति घोषित करे। परन्तु उसके लिए उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि पराजित होने के बावजूद वे विश्वासी पर जहाँ भी हो सके, आक्रमण करती हैं। इस प्रकार मसीही को दुष्टात्मिक (सांसारिक, पापमय) प्रभावों के प्रति सर्वोच्च सतर्कता के लिए बुलाया गया है। उसे इन युक्तियों को उजागर करना और उनका सामना करना है। इस प्रकार मसीही होना एक संघर्ष बन जाता है, परन्तु ऐसा संघर्ष, जो विजेता, अर्थात् ऊँचे पर उठाए गए प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य में जीता जा सकता है। **इफिसियों के नाम पत्री अपने पाठकों को इस योग्य बनाती है कि वे अपने प्रभु और उसकी शक्ति की सामर्थ्य पर निर्भर रहकर, शक्तियों के सामने मसीह में अपनी नई स्थिति को सचेत रूप से जिँटें।** इस अनुभूति को हम शायद केवल हल्के रूप में ही महसूस कर सकते हैं, परन्तु उतना ही अधिक हमें अपने समय में इन प्रभावों को गंभीरता से लेना चाहिए।

पवित्रशास्त्र स्वयं बताता है कि स्वर्गदूतों का जातियों पर अधिकार है। दानियेल 10 में प्रधानों की, अर्थात् मादै और फ़ारस के राज्यों के, और यूनान के भी, स्वर्गदूत-शक्तियों की बात है। सिकंदर महान का आकर्षक व्यक्तित्व और

उसका तीव्र उत्थान इस पहलू से कहीं अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है। स्वर्गदूतों का प्रधान मीकाएल इस्राएल की प्रजा को सौंपा गया है। व्यवस्थाविवरण 29:26; 32:8 में (सेप्टुआजेंट और पुराना लैटिन अनुवाद पढ़ते हैं: परमेश्वर के स्वर्गदूतों की संख्या के अनुसार) यह बात सब जातियों तक विस्तारित की गई है।

जातियों के देवता व्यर्थ हैं; वे कुछ नहीं, सच्चे देवता नहीं हैं। यहोवा (YHWH) के सिवा कोई परमेश्वर नहीं। परन्तु दूसरी ओर इन मूर्तियों के पीछे दुष्टात्माओं का संसार छिपा है (1 कुरिन्थियों 10:19 आगे)। इस प्रकार दृश्य संसार का अदृश्य संसार पर सीधा प्रभाव होता था।

प्रेरितों के काम (अध्याय 19) में लूका का विस्तृत विवरण ऊपर कही गई बातों की पुष्टि करता है (जर्मन एल्बरफेल्डर अनुवाद से अनूदित):

“ वह (पौलुस) आराधनालय में गया और तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा; वह उनसे चर्चा करता और परमेश्वर के राज्य की बातों के विषय में उन्हें क्रायल करता था। परन्तु जब कुछ लोग कठोर हो गए और विश्वास नहीं किया¹ और भीड़ के सामने उस मार्ग² की बुराई करने लगे, तो वह उनसे अलग हो गया और चेलों को अलग कर लिया, और प्रतिदिन तुरन्तुस की पाठशाला में चर्चा करता रहा। यह दो वर्ष तक होता रहा, यहाँ तक कि आसिया में रहनेवाले सब लोगों ने, यहूदियों और यूनानियों दोनों ने, प्रभु का वचन सुना। और परमेश्वर पौलुस के हाथों से असाधारण आश्चर्यकर्म करता था, यहाँ तक कि लोग उसकी देह से रूमाल या अंगोछे ले जाकर बीमारों पर रखते थे, और बीमारियाँ उनसे दूर हो जाती थीं और दुष्ट आत्माएँ निकल जाती थीं।

परन्तु घूमनेवाले यहूदी झाड़-फूँक करनेवालों में से भी कुछ ने यह करने का प्रयास किया कि जिनमें दुष्ट आत्माएँ थीं, उन पर प्रभु यीशु का नाम पुकारें, और कहें: जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूँ! यह करनेवाले स्किवा नामक किसी यहूदी महायाजक के सात पुत्र थे। परन्तु दुष्ट आत्मा ने उत्तर देकर उनसे कहा: यीशु को तो मैं जानती हूँ, और पौलुस के विषय में भी मुझे पता है; परन्तु तुम कौन हो? और वह मनुष्य, जिसमें दुष्ट आत्मा थी, उन पर झपटा और दोनों पर क़ाबू पाकर उन्हें हरा दिया, यहाँ तक कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से भाग निकले। यह बात इफिसुस में रहनेवाले सब यहूदियों और यूनानियों को मालूम हो गई; और उन सब पर भय छा गया, और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। और जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतों ने आकर अपने कामों को मान लिया और प्रकट किया। और जादू-टोना करनेवालों में से बहुतों ने अपनी पुस्तकें इकट्ठी करके सबके सामने जला दीं; और जब उनका मूल्य जोड़ा गया, तो वह चाँदी के पचास हजार सिक्कों के बराबर निकला। इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्य के साथ³ बढ़ता गया और प्रबल होता गया⁴।”



इफिसियों की अरतिमिस महान है! प्रेरितों के काम 19:23-40 (जर्मन एल्बरफेल्डर अनुवाद से अनूदित)

“उस समय उस मार्ग^१ के कारण कोई छोटा उपद्रव नहीं हुआ। क्योंकि देमेत्रियुस नाम का एक सुनार, जो अरतिमिस के चाँदी के मंदिर बनाता था, कारीगरों को कोई कम कमाई नहीं दिलाता था; और उसने उन्हें और इस काम में लगे मज़दूरों को इकट्ठा करके कहा: भाइयो, तुम जानते हो कि इसी कमाई से हमारी समृद्धि है; और तुम देखते और सुनते हो कि इस पौलुस ने न केवल इफिसुस में, बल्कि लगभग पूरे आसिया में एक बड़ी भीड़ को यह कहकर बहका और बदल दिया है कि जो हाथों से बनाए जाते हैं, वे देवता नहीं हैं। हमारे लिए केवल यही खतरा

नहीं कि हमारे इस धंधे की बदनामी हो, बल्कि यह भी कि महान देवी अरतिमिस का मंदिर तुच्छ समझा जाए और उसकी वह भव्य महानता भी नष्ट हो जाए, जिसकी पूजा पूरा आसिया और सारा संसार करता है।

जब उन्होंने यह सुना, तो वे क्रोध से भर गए और चिल्लाकर कहने लगे: इफिसियों की अरतिमिस महान है! और नगर में हलचल मच गई; और वे एक मन होकर रंगशाला की ओर दौड़े, और पौलुस के यात्रा-साथी मकिदुनी गयुस और अरिस्तर्खुस को भी घसीट ले गए। जब पौलुस लोगों के बीच जाना चाहता था, तो चेलों ने उसे जाने न दिया। आसिया के कुछ अधिकारी⁶ भी, जो उसके मित्र थे, उसके पास संदेश भेजकर उससे विनती करने लगे कि वह रंगशाला में न जाए। अब कोई कुछ चिल्ला रहा था, कोई कुछ; क्योंकि सभा में गड़बड़ी थी, और अधिकतर लोग जानते ही न थे कि वे किस लिए इकट्ठे हुए हैं। तब उन्होंने भीड़ में से सिकंदर को आगे किया, जिसे यहूदी आगे धकेल रहे थे। सिकंदर ने हाथ से इशारा किया और लोगों के सामने अपना पक्ष रखना चाहा। परन्तु जब उन्होंने पहचाना कि वह यहूदी है, तो सबके मुँह से एक ही आवाज़ उठी, और वे लगभग दो घंटे तक चिल्लाते रहे: इफिसियों की अरतिमिस महान है! तब नगर के मंत्री ने भीड़ को शांत करके कहा: इफिसुस के लोगो, मनुष्यों में ऐसा कौन है, जो नहीं जानता कि इफिसियों का नगर महान अरतिमिस के मंदिर का और आकाश से⁷ गिरी हुई मूर्ति का रखवाला है? जब यह बात निर्विवाद है, तो तुम्हें उचित है कि शांत रहो और जल्दबाज़ी में कुछ न करो। क्योंकि तुम इन लोगों को यहाँ ले आए हो, जो न मंदिर लूटनेवाले हैं, न हमारी देवी की निंदा करनेवाले। यदि देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों का किसी से कोई झगड़ा है, तो अदालत के दिन लगते हैं और प्रोक्ॉन्सल (राज्यपाल) भी हैं; वे एक दूसरे पर मुकदमा करें। परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ चाहते हो, तो उसका निपटारा नियमित सभा में होगा। क्योंकि आज के उपद्रव के कारण हम पर दोष लगाए जाने का खतरा है, क्योंकि ऐसा कोई कारण नहीं, जिसके आधार पर हम इस भीड़ का उत्तर दे सकें। और यह कहकर उसने सभा को विदा कर दिया।

परमेश्वर के हथियार: आत्मिक युद्ध, पर कैसे?

आत्मिक संघर्ष के विषय में निर्देशों को पत्रों के व्यावहारिक भाग के समापन के रूप में कम, बल्कि उसके शिखर के रूप में समझना चाहिए। हर हाल में हमारे सामने एक प्रकार का सारांश देनेवाला समापन-भाषण है। इसकी तुलना युद्ध आरंभ होने से पहले अपने योद्धाओं से एक सेनापति के भाषण से की जा सकती है। आत्मिक संघर्ष की गंभीरता का ठीक-ठीक अनुमान लगाने के लिए युद्ध से पहले के इस नाटकीय तनाव को थोड़ा अपनी आँखों के सामने लाना अच्छा है।

मसीही जीवन एक निरंतर संघर्ष है। इसे समझाने के लिए पौलुस एक सैनिक का चित्र देता है, संभवतः एक रोमी सैनिक का, जो उस समय इफिसुस की सड़कों पर आम दृश्य थे। इस चित्र से वह युद्ध की वर्तमानता और उसकी कठोर वास्तविकता को भी रेखांकित करता है, जो आत्मिक संघर्ष पर भी लागू होती है। वास्तव में वह यहाँ अखाड़े में कुश्ती के लिए प्रयुक्त शब्द का प्रयोग करता है, क्योंकि वह इससे शत्रु की निकटता पर ज़ोर देना चाहता है। इस अर्थ में स्वर्गीय स्थानों की तुलना एक स्वर्गीय अखाड़े से की जा सकती है।

प्रतिरूप-विद्या में हम पहले ही उस संघर्ष की बात कर चुके हैं, जो उस समय कनान में वास्तव में और शाब्दिक रूप से हुआ। पौलुस कहता है कि हमारा संघर्ष मांस और लहू से नहीं, अर्थात् मनुष्यों से नहीं, बल्कि स्वर्गीय स्थानों में दुष्टता की आत्मिक (अदृश्य) शक्तियों से है (6:10-20)। चित्र में ही रहें तो: दुष्टता की ये शक्तियाँ पूरी शक्ति से रोकना चाहती हैं कि हम कनान में जिएँ, अर्थात् स्वर्गीय स्थानों में मसीह में अपनी मसीही स्थिति को जिएँ। वे यह

चाहती हैं कि हम स्वर्गीय आशीष के धन का स्वाद न लें और उसका आनन्द न लें, उसे जीएँ नहीं और उसकी गवाही न दें। ये शक्तियाँ हमारे विश्वास-जीवन को नष्ट करना, सुखा देना और उसे संसार की उस रीति में वापस धकेल देना चाहती हैं, जहाँ से हम आए हैं। संसार की रीति के अनुरूप ढल जाने से मसीह में परमेश्वर के नए मनुष्य की गवाही और सुसमाचार की गवाही मर जाती है। वहाँ तक का मार्ग दुष्टात्मा-ग्रस्तता नहीं, बल्कि पाप है।

आइए, स्मरण करें: मसीह में इफिसी लोग एक ही बार सदा के लिए इन विशाल और अनगिनत स्वर्गदूत-शक्तियों से ऊपर उठाए गए थे। इसलिए उन्हें अब उनसे डरने की आवश्यकता नहीं थी। यह एक ऐसी राहत और मुक्ति थी, जिसे आज हम शायद ही समझ सकते हैं। परन्तु यहाँ वे एक घातक भूल कर सकते थे। खतरा अब भी था, परन्तु उस रूप में नहीं, जैसा उनके मन फिराने से पहले था। इन आत्मिक शक्तियों से अब भी डरना था, क्योंकि विश्वासी फिर से आक्रमण का लक्ष्य बन गए थे। परन्तु अब बात यह थी कि मसीह में उनकी ऊँची विजय-स्थिति को व्यवहार में उतरने से रोका जाए। यह स्थिति वे विश्वासियों से अब छीन नहीं सकती थीं, परन्तु इस स्थिति में, या इसकी शक्ति से जीया गया जीवन छीन सकती थीं। अब शैतान के बल से नहीं, बल्कि उसकी चालाकी से डरना था। ये चालें उन्हें संसार में, हर स्थान पर और जीवन की हर परिस्थिति में मिलती थीं – विवाह और परिवार में, कार्यस्थल पर और कलीसिया में। इसलिए विश्वास-जीवन में सर्वोच्च सतर्कता और एकाग्रता की माँग है। ये वास्तविक प्राणी और शक्तियाँ हैं, जो वायु में, अर्थात् हमारे बिल्कुल आसपास घूमती हैं, और लगातार हमारे पतन और हार के लिए काम करती हैं। परन्तु पौलुस हमें बल की स्थिति में देखता है – न केवल हमारी स्थिति के विषय में, बल्कि हमारे विश्वास-जीवन में भी: उसमें हम बलवान हैं, इन शक्तियों से अधिक बलवान, जो पराजित हैं। मसीह की सामर्थ्य के बाहर हमारा कोई अवसर नहीं, क्योंकि ये प्राणी, ये शक्तियाँ हमसे अधिक बलवान और अधिक चालाक हैं।

ये शक्तियाँ कैसे काम करती हैं, उनकी रणनीति और युक्ति क्या है, यह उन आत्मिक हथियारों से स्पष्ट होता है, जिन्हें हमें बाँधना है। वहाँ हमारे हथियार हैं: **सत्य, धार्मिकता, शान्ति, विश्वास, उद्धार और वचन**। इससे दिखाई देता है कि शत्रु असत्य, अधार्मिकता, अशान्ति, अविश्वास और संदेह के द्वारा हमारे विश्वास-जीवन को नष्ट करना चाहता है। **वास्तव में शत्रु के निशाने पर हमारे मसीही होने का नैतिक पक्ष है।**

इन अदृश्य, शैतानी स्वर्गीय सेनाओं का दुष्ट प्रभाव आवश्यक रूप से दुष्टात्मा-ग्रस्तता में दिखाई नहीं देता, जैसा कुछ लोग मानते हैं। यह प्रभाव चालाक और बहकानेवाला है। हमारा सामना ज्योति के स्वर्गदूत से है, जो भक्ति का वेश धरकर आता है। बात किसी सनसनीखेज़ चीज़ की नहीं है, इस अर्थ में कि हम आक्रमण करें और दुष्ट शक्तियों का सामना करें, ताकि उदाहरण के लिए उन्हें किसी नगर या क्षेत्र से खदेड़ दें। इस प्रकार का युद्ध, जो करिश्माई आंदोलन में किया जाता है, पौलुस के इस पाठ से किसी भी हाल में निकाला नहीं जा सकता (और न ही किसी अन्य पाठ से)। चाहे हम इफिसुस नगर में गुप्त विद्या, टोने और जादू के कारण शायद इसकी अपेक्षा करें। नहीं, **यह संघर्ष कोई धर्मयुद्ध नहीं है – न अविश्वासियों के विरुद्ध, न दुष्टात्माओं के विरुद्ध**; यह एक ऐसा संघर्ष है, जो विवाह, परिवार और कलीसिया में अशान्ति के द्वारा हमारे आत्मिक जीवन के सबसे नाजुक स्थानों पर चोट करना चाहता है। उसमें तो हमारे पास अभी से इन शक्तियों पर विजय की स्थिति है, और इसलिए हमें ठीक वही होना और वही जीना है।

यह उल्लेख करना आवश्यक है कि दुष्टात्माओं और दुष्टात्मा-ग्रस्त लोगों से सामना हो सकता है और होता है। यह विशेष रूप से उन देशों पर लागू होता है, जहाँ टोना संस्कृति का दृढ़ और गहरा भाग है, और इसलिए दुष्टात्मा-ग्रस्तता बहुत होती है। परन्तु सच्चे विश्वासी, जो मसीह में शक्तियों से ऊपर उठाए गए हैं, दुष्टात्मा-ग्रस्त नहीं हो

सकते। दुष्टात्माओं का प्रभाव विश्वासियों के जीवन में काम कर सकता है – गुप्त विद्या के बोझ से कम, और सांसारिक चाल-चलन से अधिक। आज इस बात को कम आँका जाता है कि यह तथ्य अदृश्य संसार से जुड़ा है।

हर पाप या संसार के अनुरूप ढलने को इन शक्तियों से नहीं जोड़ा जा सकता; “हर झाड़ी के पीछे कोई दुष्टात्मा नहीं छिपी है।” संसार, हमारा शरीर और आत्मिक संसार – ये हमें गिराना चाहते हैं। यह भीतर से, बाहर से, और अदृश्य संसार के द्वारा अलौकिक प्रभाव है।

हमारे संघर्ष का वर्णन कैसे किया जा सकता है, वह किस प्रकार का है? पौलुस के निर्देशों से यह समझना होगा कि बात आक्रमण के युद्ध की नहीं है। बात “सामना कर सकने”, “विरोध करने” और “खड़े रहने” की है। अर्थात् हमें अपनी स्थिति बनाए रखनी है, और जो हमारी विश्वास-संपदा और विश्वास का अनुभव है, उसे न छोड़ना है, न सौंप देना है। आक्रमण का एकमात्र हथियार तलवार है, जो आमने-सामने की लड़ाई में बचाव के लिए भी अनिवार्य है।

फिर भी इस वर्णन में कुछ आक्रामक भी है। सुसमाचार की घोषणा अंधकार के राज्य पर सीधा आक्रमण है। सुसमाचार वह हथियार है, जिससे शैतान से उसकी लूट छीनी जा सकती है। शान्ति के सुसमाचार की तैयारी के अच्छे जूते सुसमाचार-प्रचार के संघर्ष में गतिशीलता और गति की गवाही देते हैं।

यद्यपि पाठ में इसका उल्लेख नहीं है, फिर भी उत्साहवर्धक बात यह है कि हर संघर्ष अकेले नहीं लड़ा जाता। हमारी टुकड़ी प्रभु की सेना है, जिसमें हम कलीसिया में एक साथ खड़े होते हैं और मसीह के साथी योद्धाओं के रूप में लड़ते हैं।

फिर भी यह संकेत: हथियार हम पर वैसे नहीं उगते, जैसे किसी पक्षी पर पंख उगते हैं; हमें उन्हें बाँधना है, अपने दैनिक जीवन में सक्रिय रूप से उनका उपयोग करना और उन्हें व्यवहार में उतारना है।

इफिसुस और कुलुस्से

हर थोड़ा-बहुत क्रमबद्ध रूप से बाइबल पढ़नेवाले ने इन दोनों नगरों की कलीसियाओं के नाम पत्रियों में एक निश्चित समानता या समानांतर बातें देखी होंगी। वे एक ही समय में लिखी गईं, और फिलेमोन की पत्री भी। इस दृष्टि से एक तुलनात्मक अध्ययन निश्चय ही लाभदायक है।

यहाँ इतना संकेत पर्याप्त होगा कि बाइबल-आलोचनात्मक धर्मविज्ञान, जिसने यह खोज निकालना अपना कार्य बना लिया है कि क्या-क्या सही नहीं हो सकता, यह दावा करता है कि कुलुस्सियों की पत्री पौलुस ने नहीं लिखी, और वह फिर इफिसियों की पत्री के एक लेखक (वह भी पौलुस नहीं) के लिए आधार बनी।

यह बहुत से सिद्धांतों में से केवल एक है। हम पवित्रशास्त्र की अपनी गवाही पर विश्वास करते हैं, जो पत्रियों के अभिवादन में, बीच में और अंत में भी पौलुस को लेखक बताती है।

यह भी आश्चर्य की बात नहीं कि दो कलीसियाएँ, जो केवल लगभग 180 किमी दूर थीं, ठीक एक जैसी तो नहीं, पर मिलती-जुलती समस्याएँ रखती थीं। इसलिए पत्रियों में कई समानांतर बातें हो सकती हैं।

अन्य पुस्तकों के साथ प्रयुक्त साहित्य:

Arnold, E. Clinton, Downers Grove, 1992, Powers of darkness: principalities & powers in Paul's letters

- Arnold**, E. Clinton, Eugene OR, 1989, Power and Magic, The concept of power in Ephesians
- Blatt**, Helmut, Marburg/Lahn, 2002, Das Geheimnis der geistlichen Waffenrüstung
- Elberfelder** अनुवाद, Hückeswagen, 2005
- Ellicott**, C.J., London, reprint 2004, A Bible Commentary for Bible Students, Volume 8
- Grant, F.W.**, New Jersey, 1901, The Numerical Bible,
- Greijdanus, Dr. S.**, Kampen, 1932, Korte Verklaringen, Deel 12
- Lee**, Witness, Stuttgart, 1980, Der Brief des Paulus an die Epheser
- Lincoln**, William, Glasgow, 1980, Assembly Writer Library, Vol.II
- House**, H. Wayne, Marburg/Lahn, 1983, Chronologische Tabellen und Hintergrundinformationen zum NT
- Keener**, Craig S., Neuhausen, 1998 (1993 Inter Varsity Press), Kommentar zum kulturellen Umfeld des NT
- Kelly**, William, Oak Park, Lectures on the Epistle to the Ephesians
- Kettling**, Siegfried, 1992, Gießen, Typisch evangelisch – Grundbegriffe des Glaubens
- Martin**, P. Ralph, Wuppertal, 1985, Brockhaus Kommentar zur Bibel
- Medema**, H.P., Vaassen, 1991, De nieuwe Mens: Commentaar op de Brief van Paulus an des Efeziërs
- Remmers**, Arend, Hückeswagen, 2004, In Christus gesegnet, Eine Auslegung zum Epheserbrief
- Smith**, Hamilton, Edingburgh, The Epistle to the Ephesians, An Expository Outline
- Stadelmann**, Helge, Neuhausen Stuttgart, 1993, Der Epheserbrief, EDITION C-Bibelkommentar
- Stott**, John R.W., VTR, Nürnberg 2001, Die Botschaft des Epheserbriefes
- Schmalenbach**, Hanna-M., Marburg/Lahn, 2007, Frausein zur Ehre Gottes im Kontext verschiedener Kulturen
- Tenney**, Merrill C., Marburg/Lahn, 1979, Die Welt des Neuen Testaments
- Wjst**, Walter, Dillenburg, 1999, Ephesus – Aufstieg und Fall einer Großstadtgemeinde
- Hoehner, Harold W.**, Michigan, 2002, Ephesians, An Exegetical Commentary
- Peters, Benedikt**, Berneck, 1991, Pulsierendes Leben, Ein Gang durch den Epheserbrief
- Peters, Benedikt**, Berneck, 1989, Dämonische Verstrickungen, Biblische Befreiung

टिप्पणियाँ

1. या: और आज्ञा नहीं मानी।
2. अर्थात् मसीही मार्ग या मसीही अंगीकार।
3. अन्य पाठ: इस प्रकार वचन प्रभु की सामर्थ्य में बढ़ता गया।
4. या: शक्तिशाली सिद्ध हुआ।
5. अर्थात् मसीही मार्ग या मसीही अंगीकार।
6. अर्थात् जनता के प्रतिनिधि, जो धार्मिक उत्सवों के लिए भी ज़िम्मेदार थे।
7. शाब्दिक: ज़ूस से।